

तमसो मा ज्योतिर्गमय

# शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 4, मार्च 2023 , मूल्य-15 रु

[schooleducationharyana.gov.in](http://schooleducationharyana.gov.in) | [shikshasaarathi@gmail.com](mailto:shikshasaarathi@gmail.com)



**राष्ट्रीय बालरंग उत्सव में  
हरियाणा का परचम**



# प्रार्थना है यही

बुद्धि का कमल खिले  
प्रार्थना है यही।

अंधकार को मिटा  
मोह आवरण हटा  
कंठ में सुराग भर  
गीत हो उठें मुखर  
गीत औ संगीत का  
बना रहे सिलसिला।  
कामना करूँ यही।।

बुद्धि माँ करो विमल  
भाव दे नवल-नवल  
तम सघन विनाश कर  
मूढ़ता का नाश कर  
बुद्धि हो समुज्ज्वला।  
चाहना है बस यही।।

माँ मुझे दुलार दे  
सप्त स्वर सँवार दे  
नित नवीन भाव भर  
शब्द-शब्द हों प्रखर  
कर सर्वूँ जगत भला।  
भावना है शुभ यही।।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'  
व्याख्याता-हिन्दी  
अशोक उमा विद्यालय  
लहार, भिंड, मप्र.



## शिक्षा सारथी

मार्च 2023

प्रधान संरक्षक  
मनोहर लाल  
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक  
कैचर पाल  
स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक  
विजयेंद्र कुमार  
प्रधान सचिव,  
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल  
डॉ. अंशुज सिंह  
निदेशक,  
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा  
एवं  
राज्य परियोजना निदेशक,  
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. वीरेंद्र कुमार दहिया  
निदेशक,  
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा  
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)  
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक  
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक  
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग  
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, वार्षिक: 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I, New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

अपने जीवन की तुलना किसी से न कीजिये। सूर्य और चंद्रमा में कोई तुलना नहीं, जब जिसका वक्त आता है, तब वह चमकता है।

- |   |    |
|---|----|
| » राष्ट्रीय बाल रंग महोत्सव में हरियाणा की धूम                          | 5  |
| » लोक कला और संस्कृति का समागम: कल्चरल फ़ैस्ट                           | 9  |
| » अंतर्निहित कला और भाव संप्रेषण का सशक्त माध्यम है-कल्चरल फ़ैस्ट       | 12 |
| » सांस्कृतिक उत्सव: विरासत को बचाने का पावन प्रयास                      | 14 |
| » स्नोफॉल ने बढ़ाया '29वें राष्ट्रीय विंटर एडवेंचर उत्सव' का आनंद       | 16 |
| » राष्ट्रीय एकता की अवधारणा को मूर्त रूप दिया नेशनल इंटीग्रेशन कैम्प ने | 22 |
| » विद्यार्थियों ने लिखीं शहीदों की शौर्य गाथाएँ                         | 24 |
| » खेल-खेल में विज्ञान   | 28 |
| » बेहद मधुर है पहाड़ी मैना का स्वर                                      | 30 |
| » महिलाओं के अधिकारों का हनन क्यों ?                                    | 31 |
| » E-Waste – A Challenge for Modern Generation                           | 32 |
| » Who will win the battle of Life?                                      | 34 |
| » Camp  | 35 |
| » Constitutional Rights for Students in India                           | 36 |
| » Salt Run  | 38 |
| » 50th State Level Science, Mathematics..                               | 39 |
| » Conversing with Colours   | 44 |
| » Courses After +2  | 45 |
| » Amazing Facts   | 48 |
| » General Knowledge Quiz  | 49 |

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।



## कला और संस्कृति के माध्यम से सर्वांगीण विकास

**शि**क्षा का उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास का अर्थ है बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक, नैतिक और सामाजिक विकास, ताकि बड़ा होने पर वह इस समाज का एक संवेदनशील व जागरूक व्यक्ति बन सके। विद्यालयों में आयोजित अनेक सह-शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन का उद्देश्य भी यही है। कला व सांस्कृतिक गतिविधियाँ उन्हें अपनी प्रतिभा व कौशल दिखाने का अवसर प्रदान करती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि भारत की इस सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार, देश की उच्चतम प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि यह देश की पहचान के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। संस्कृति का प्रसार करने का सबसे प्रमुख माध्यम कला है। कला सांस्कृतिक पहचान, जागरूकता को समृद्ध करने और समुदायों को उन्नत करने के अतिरिक्त, व्यक्तियों में संज्ञानात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं का संवर्धन तथा व्यक्तिगत प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए जानी जाती है। व्यक्तियों की प्रसन्नता/कल्याण, संज्ञानात्मक विकास और सांस्कृतिक पहचान वे महत्वपूर्ण कारण हैं, जिनके लिए सभी प्रकार की भारतीय कलाएँ प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल व शिक्षा से आरम्भ करते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को प्रदान की जानी चाहिए।

हर्ष का विषय है कि प्रदेश में पहले से ही इस दिशा में काफी कार्य हो रहा है। विद्यालय स्तर पर कला और संस्कृति क्लब बनाए गए हैं। कला-गतिविधियों के लिए विद्यालयों को अनुदान दिया जा रहा है। इन सबका परिणाम है कि प्रदेश के विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं।

प्रस्तुत अंक इन्हीं गतिविधियों पर केंद्रित है। आपकी प्रतिक्रियाओं व अमूल्य सुझावों की हमेशा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।



# राष्ट्रीय बाल रंग महोत्सव में हरियाणा की धूम



## डॉ. ओमप्रकाश कादयान



शिक्षा क्षेत्र हो, एडवेंचर हो, खेल हो या सांस्कृतिक क्षेत्र, हरियाणा अपनी अमिट छाप छोड़ ही देता है। कोई भी प्रतियोगिता या किसी तरह का

आयोजन हो, राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विजेता रहकर अपनी अद्वितीय क्षमताओं का लोहा मनवा ही लेता है। रही बात विद्यालय स्तरीय विद्यार्थियों की, तो ये विद्यार्थी कमाल का प्रदर्शन करते हैं। खासकर जब छात्राएँ

रंगमंच पर नृत्य करती हैं तो विश्वास करना कठिन होता है कि ये राजकीय विद्यालयों की छात्राएँ हैं। पिछले दिनों भोपाल के श्यामला हिल्स स्थित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में आयोजित राष्ट्रीय बाल रंग महोत्सव (18-19 दिसम्बर 2022) में हरियाणा के विद्यार्थियों ने जो शानदार-जानदार लोक नृत्य प्रस्तुत किया, वह अमिट छाप छोड़ गया। कल्चर फेस्ट में राज्य में प्रथम स्थान पर रही राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुरथल अड्डा सोनीपत की नृत्य टीम ने जिस ऊर्जा, जोश, उत्साह व अद्भुत नृत्य कला क्षमता से नृत्य किया उससे प्रभावित होकर महोत्सव के अतिथिगण के मुख से भूरि-भूरि प्रशंसा निकली। हरियाणा की प्रतिभावान, ऊर्जावान छात्राओं ने 20 राज्यों की नृत्य टीमों में से सत्रह टीमों को

पछाड़ते हुए राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान हासिल किया।

हरियाणा ने बाल रंगोत्सव में 2016 से भाग लेना शुरू किया था और इसी वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसके बाद हरियाणा ने करीब हर वर्ष नृत्य प्रतियोगिता में बाजी मारी है।

हरियाणा टीम की स्टेट कोर्डिनेटर व कार्यक्रम अधिकारी पूनम अहलावत ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित बालरंग का उद्देश्य है कि भारत भर के प्रदेशों के लोक नृत्यों को बढ़ावा मिल सके, उनका संरक्षण व सर्वर्धन हो सके तथा लोक नृत्यों के माध्यम से राज्यों की कला संस्कृति, वैश-भूषा का प्रदर्शन बेहतरीन तरीके से हो सके। अलग-अलग राज्यों, इलाकों से आए हुए कलाकार विद्यार्थी सभी राज्यों के लोक नृत्यों, भाषा,





संस्कृति से परिचित हो सकें। हरियाणा की छात्राओं को इस आयोजन के दौरान सिक्किम, मणिपुर व राजस्थान की नृत्य टीमों के साथ ठहराया गया था। इसका फायदा यह हुआ कि मणिपुर, सिक्किम, राजस्थान व हरियाणा राज्यों के बच्चों को एक दूसरे से आपस में बातें करने, उनका स्वभाव जानने, संस्कृति से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे एक दूसरे के साथ बैठे, एक साथ खाना खाया। भाषा, विचारों, भावों, संस्कृतियों का आदान-प्रदान हुआ। पूरे आयोजन के दौरान 20 राज्यों से आए कलाकारों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। पूरा माहौल अनेकता में एकता का संदेश दे रहा था। इसी मौके पर समय निकालकर बच्चों को भोपाल शहर की ऐतिहासिक धरोहरों पर घुमाया गया। शहर और पहाड़ों के मध्य स्थित झीलों पर ले जाया गया। झीलों का प्राकृतिक सौन्दर्य देख तथा ब्रूज से झीलों की यात्रा कर बच्चे आनन्दित व उत्साहित थे।

बाल-रंग महोत्सव में प्रथम आने वाली टीम को 51,000 रुपये, दूसरे स्थान पर आने वाली टीम को 41,000 रुपये तथा तीसरे स्थान पर आने वाली टीम को 31,000 रुपये इनाम दिया गया। हरियाणा की टीम बेशक तीसरे स्थान पर रही, परंतु इसने सबसे अधिक तालियाँ बटोरीं। स्थानीय समाचार-पत्रों में कार्यक्रम के बारे में जो समाचार छपे, उनमें हरियाणा के नृत्य की तस्वीरों को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, बस जरूरत है इन विद्यार्थियों के सही मार्गदर्शन,



प्रोत्साहन तथा अवसर देने की। फिर ये बच्चे कमाल का प्रदर्शन कर जाते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर अगर ये बच्चे बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं तो इसके लिए शिक्षा विभाग बधाई का पात्र है, क्योंकि कल्चरल फेस्ट, कला उत्सव, एडवेंचर जैसे कई कार्यक्रम हैं जो बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला में कार्यरत अनेक अधिकारी ऐसे हैं जो अपनी सामाजिक परिवर्तन वाली सकारात्मक सोच, बेहतर योजनाओं, कुशल कार्यशैली, निष्ठावान भाव से सार्थक प्रयास कर रहे हैं। वे जानते हैं देश को हर तरह मजबूत करना है तो शिक्षा में संस्कार का समावेश अति आवश्यक है। इसका सबसे बेहतर तरीका है कि विद्यार्थियों को संस्कारवान बनायें। उन्हें अच्छी शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, संस्कृति व प्रकृति का आदर करना सिखायें। वे ये भी चाहते हैं कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो, यानी विद्यार्थी केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि अन्य कलाओं में भी पारंगत हों। वे विद्यार्थियों को मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से मजबूत बनाना चाहते हैं। विद्यार्थी पढ़-लिख कर केवल रोजगार ही हासिल न करें, बल्कि वे अपने समाज, अपने देश के हित की भी सोचें। उनमें सहयोग, भाईचारे की भावना हो। कुछ समय दूसरे लोगों की भलाई व उत्थान के लिए भी निकालें। उन्हें वातावरण की चिंता हो, समाज में व्याप्त बुराइयों से लड़ें। अगर हम अपनी संस्कृति को भूल जाएँगे तो कभी खुश नहीं रह सकेंगे। आज समाज में बुराइयों ने इसलिए जगह





बना ली, क्योंकि हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। इसी के समाधान के लिए शिक्षा विभाग ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सांस्कृतिक उत्सव (कल्चरल फेस्ट) शुरू किए हैं।

ब्लॉक स्तर से लेकर राज्य स्तर तक कल्चरल फेस्ट का आयोजन धूम-धाम से होता है। इससे एक साथ हरियाणवी लोक नृत्य, लोक गायन, लोक संगीत, लोक गीत जैसी लुप्त होती जा रही हमारी संस्कृति विरासत को जहाँ बढ़ावा मिल रहा है, वहीं गायन क्षेत्र में प्रतिभाएँ उभर रही हैं। नृत्य के साथ गाने वाली छात्राएँ व छात्र कमाल के सुर निकालते हैं। धीरे-धीरे कुछ वर्षों में हरियाणा में बहुत से कामयाब कलाकार प्रकाश में आएंगे। यह शिक्षा विभाग की बड़ी उपलब्धि होगी। रागिनी की लोकप्रियता में भी काफी कमी आई है। कभी वे दिन भी थे जब रागिनी मनोरंजन, शिक्षा देने का खास माध्यम होती थी, किन्तु जैसे-जैसे मनोरंजन के साधन बदलते गए, रागिनी गायिकी दम तोड़ती गई। शिक्षा विभाग की बढौलत रागिनी को नव-जीवन मिल रहा है। लोक संगीत के साथ लोक स्वर वातावरण में गूँजते सुनाई देते हैं। अनेक प्रतिभाएँ उभर रही हैं। लड़कियाँ भी रागिनी गायन में कमाल की प्रस्तुति दे रही हैं। वहीं नाटकों के माध्यम से हरियाणवी रंगमंच को पुनर्जीवन मिल रहा है। राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में विद्यार्थियों ने नाटकों के माध्यम से अपनी प्रभावशाली छाप छोड़ी है। ये नाटक देश का भविष्य यानी बच्चों के हृदय परिवर्तन करने में जरूर सहायोगी होंगे। नाटकों के जरिए समाज में व्याप्त

सहायक निदेशक नन्दकिशोर वर्मा ने कहा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला द्वारा शुरू किये गए सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी, लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। ये बच्चों के लिए ऐसी ऊर्जा का काम कर रहे हैं, जो उन्हें अधिक सक्रिय, जोशीला, ऊर्जावान बना रही है। सांस्कृतिक उत्सव बच्चों के लिए मस्ती का, उत्साह का, खुशी का, सीख देने का तथा अपनी परम्पराओं से जुड़ने का माध्यम है। सांस्कृतिक उत्सव, बेहतर नागरिक बनाने व कामयाब ईंसान बनाने में मदद कर रहे हैं। इन उत्सवों से लुप्त हो रही हमारी समृद्ध परम्पराओं, लोक कलाओं से भी नई पीढ़ी रू-ब-रू हो रही है। इससे लोक-कलाओं को नवजीवन व बल मिल रहा है।

बुराइयों, कुर्ीतियों पर जहाँ करारा कटाक्ष किया जाता है, वहीं पर्यावरण की चिंता भी झलकती प्रतीत होती है। इसी तरह रागिनियों के माध्यम से भी शिक्षाप्रद सीख दी जाती है। इन सबका असर नई पीढ़ी पर अवश्य पड़ेगा और वहीं

असर बड़े सामाजिक बदलाव का कारण बन सकता है। शिक्षा विभाग के आयोजक अधिकारियों की सकारात्मक व दूरगामी सोच बेहतर परिवर्तन ला सकती है, ऐसी उम्मीद हम कर सकते हैं। इन बच्चों को विभाग की ओर से

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, प्योदा, कैथल के भूगोल प्राध्यापक अरुण राणा ने कहा कि पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ अध्ययन में सरसता और रोचकता लेकर आती हैं तथा विद्यार्थियों में नवीनता का संचरण करती हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। अतः हमें किताबी ज्ञान के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर पर्याप्त बल देना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, नई शिक्षा नीति आदि में भी पाठ्येतर गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना गया है। इसलिए मैं चाहूँगा कि विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन नियमित रूप से किया जाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को उनकी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार उनमें भाग लेने के समुचित अवसर प्रदान करने चाहियें। जिससे उनके व्यक्तित्व का संतुलित व सर्वांगीण विकास हो सके। ये क्रियाएँ पाठ्यक्रम की पूरक तथा आवश्यक अंग हैं। कल्चरल फेस्ट विद्यार्थियों को हरियाणवी संस्कृति और लोक कलाओं से परिचय करवा रहा है। विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा कल्चरल फेस्ट का आयोजन करवाना एक सराहनीय पहल है। कल्चरल फेस्ट के माध्यम से विद्यार्थी अपनी लोक संस्कृति से रू-ब-रू हो रहे हैं तथा रागिनी, लोक गीत, लोक नृत्य, स्किट, साँड़ी आदि विधाओं में पारंगत हो रहे हैं।



कार्यक्रम अधिकारी पूनम अहलावत ने कहा कि हम इस तरह के सांस्कृतिक उत्सवों से एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, वहीं बच्चों को सृजनात्मकता से जोड़कर उन्हें सफल नागरिक बना रहे हैं। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों का कला के प्रति रुझान बढ़ रहा है। बच्चे अपनी संस्कृति से जुड़ रहे हैं तथा प्रकृति की महत्ता समझ रहे हैं। बच्चों को आत्मनिर्भर होने में मदद मिल रही है। सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभाओं को तराशकर, निखारकर उन्हें बहुमुखी प्रतिभाशाली बना रहे हैं। नाटक, नृत्य, गायन, लोक-कला क्षेत्रों में अपना भविष्य भी तलाश कर सकते हैं। ये उत्सव विद्यार्थियों को जहाँ अनुभवी, सक्षम, कला व प्रकृति-प्रेमी बनाते हैं वहीं रोजगार भी दे सकते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए किताबी ज्ञान के साथ-साथ ये उत्सव जरूरी हैं, ताकि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले सामान्य या गरीब परिवार के विद्यार्थी भी सार्थक जीवनयापन में समर्थ हो सकें।

स्वर्णिम अवसर, माहौल मिलता है तो ये अपनी प्रतिभा से शिक्षा विभाग, माँ-बाप व अपने गाँव, जिले व राज्य का

नाम रोशन करते हैं। इस तरह के आयोजनों से बच्चों में अति उत्साह का संचार होता है। उन्हें आगे बढ़ने का

अवसर, अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है। जब बच्चे कामयाब होते हैं तो इनके मन में जो उमंग उठती है तथा मासूम चेहरे पर जो मुस्कान आती है, उसकी कोई कीमत नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर बच्चा जब घर आता है तो सभी उसे गले लगाते हैं। उसको ढेर सारी शुभकामनाएँ और शाबाशी मिलती है। वह बच्चा अपने माँ-बाप, दोस्तों, सहैलियों, शिक्षकों को बड़े चाव से सारी बातें बताता है।

ये सांस्कृतिक उत्सव नई पीढ़ी में भावों, विचारों, नये बदलावों के ऐसे बीज बो रहे हैं, जो आगे जाकर कला व सांस्कृतिक रुचि के विशाल वृक्ष बन सकेंगे। पढ़ाई के साथ सांस्कृतिक विरासत से बच्चों का जुड़ाव अच्छे संकेत हैं। आगे जाकर एक ऐसा समाज तैयार हो सकता है जो विकास तो खूब करेगा, किन्तु हमारी पारंपरिक विरासत को गँवा कर या प्रकृति का विनाश कर के नहीं, बल्कि विकास, कला, संस्कृति, परंपरा, प्रकृति से ताल मेल बिठाकर। जिस सांस्कृतिक संपदा को, संस्कारों की पिटाई को हम गँवा रहे हैं, उन्हें दोबारा से संरक्षित व विकसित कर सकेंगे। लोक कलाओं, लोक साहित्य, लोक परंपराओं का फिर से सम्मान होगा, ऐसी हम उम्मीद कर सकते हैं। ये सांस्कृतिक उत्सव निःसंदेह जहाँ विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने, उन्हें तराशने, प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होंगे, वहीं ये उत्सव ऊर्जा, उत्साह, नया जोश भरने में कामयाब होंगे, जिससे हमारे किशोर व युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि देश-हित में काम करेंगे। अनेकता में एकता का सूत्रपात होगा। बच्चे अपनी संस्कृति से जुड़ेंगे तथा प्रकृति की महत्ता को समझेंगे। बच्चों को आत्मनिर्भर होने में मदद मिलेगी।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय  
एम्पी रोही, जिला-फतेहबाद, हरियाणा







# लोक कला और संस्कृति का समागम: कल्चरल फेस्ट



## सुरेश राणा



विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ अपनी महती भूमिका अदा करती हैं। ये क्रियाएँ और शैक्षिक गतिविधियाँ

एक दूसरे की पूरक हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को तराशने का भरपूर अवसर मिलता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में विशिष्ट होता है। कोई पढ़ने में अधिक रुचि लेता है, किसी को खेलना बहुत पसंद है तो कोई पेंटिंग, साहित्यिक गतिविधियों, नृत्य कला, गायन-वादन व अन्य क्षेत्रों में प्रतिभावान हो

सकता है। अतः रुचि और क्षमता के आधार पर उन्हें व्यक्तित्व ये विकास के समान अवसर उपलब्ध करवाए जाने चाहियें तथा उनकी प्रतिभा को पहचान कर उन्हें तराशने के भरपूर प्रयास करने चाहिये। विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि उनका सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। अन्य गतिविधियाँ भी हमारे लिए उतनी ही आवश्यक हैं जितना कि शैक्षिक ज्ञान।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं, एडवेंचर कैम्प, स्काउट गतिविधियाँ, कला-उत्सव, कल्चरल फेस्ट, बालरंग,

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करता है, जिनमें विद्यार्थी बड़ चढ़कर भाग लेते हैं और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। इन पाठ्य सहगामी गतिविधियों के अंतर्गत कल्चरल फेस्ट हम सबके आकर्षण का केंद्र है। कल्चरल फेस्ट यानी सांस्कृतिक उत्सव जिसके माध्यम से विद्यार्थी हरियाणवी लोक संस्कृति से रु-ब-रु होते हैं। इस प्रतियोगिता में रागनी, लोक गीत, लोक नृत्य, स्किट, साँझी बनाओ आदि प्रतियोगिताएँ शामिल की जाती हैं।

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण तथा उसका संवर्धन करके अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा निरन्तर प्रयासरत है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्कूली छात्र-छात्राओं





जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षा हमारे जीवन का अनिवार्य अंग है, अतः हर व्यक्ति को शिक्षित होना चाहिए। हाँ, जिंदगी की सीख केवल किताबों से ही नहीं मिलती, इसके लिए अन्य गतिविधियों में भी भाग लेना अत्यंत जरूरी है। हमारी शिक्षण-व्यवस्था पाठ्यक्रम और परीक्षा के इर्दगिर्द ही घूमती है। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को परीक्षा में अधिक अंक लाने का दबाव डालते हैं। परीक्षाओं में अधिक अंक प्राप्त करना न ही सफलता का पैमाना है, न ही अधिक ज्ञान का। विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं का निरन्तर आयोजन करना चाहिए। जिससे बच्चों का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास हो। शिक्षण और पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ, दोनों ही विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व को उभारने

में सहायक होती हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग सरकारी स्कूलों में शैक्षणिक पाठ्यक्रम के अलावा पाठ्य सहगामी गतिविधियों को भी निरन्तर बढ़ावा दे रहा है ताकि विद्यार्थियों में किताबी ज्ञान के साथ-साथ अन्य कौशल भी विकसित हो। सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए सांस्कृतिक उत्सव हमारी हरियाणवी संस्कृति को सहेजने का सराहनीय आयोजन है। हमारी अपनी संस्कृति की विशिष्ट पहचान है।

**भूप सिंह**  
**प्राथमिक शिक्षक**  
**राजकीय प्राथमिक पाठशाला, उदित पाथापुर**  
**खंड- बवानी खेड़ा, भिवानी**

लिए 2017-18 में शुरुआत की गई कल्चरल फेस्ट की, जिसके माध्यम से सरकारी, आरोही व कस्तूरबा गाँधी विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अपनी कला और प्रतिभा का प्रदर्शन करने हेतु एक बहुत बड़ा मंच उपलब्ध करवाया गया है। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के दो समूह बनाए गए हैं, कनिष्ठ समूह में कक्षा पाँचवीं से आठवीं के विद्यार्थी तथा वरिष्ठ समूह में नौवीं से बारहवीं के विद्यार्थी भाग लेते हैं। इसमें खण्ड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक लोक नृत्य, लोक-गीत, साँझी बनाओ तथा स्किट आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

कल्चरल फेस्ट वास्तव में हरियाणवी संस्कृति का एक समागम है। जिसमें चारों ओर हरियाणवी लोक संस्कृति की छटा बिखरी हुई दिखाई देती है। लोक

परिधान में सजे-धजे छात्र-छात्राएँ दमकते और महकते नजर आते हैं। सिर पर सजी हुई रंग-बिरंगी पगड़ी, धोती-कुर्ता, घाघरा, बहुरंगी सितारे जड़ित चूड़ड़, कंठी, गल्सरी, झालरा, बोरला, पाजेब, तागड़ी आदि लोक परिधान और आभूषण जो प्रायः पाश्चात्य संस्कृति की आँधी में ओझल हो गए हैं इस सांस्कृतिक उत्सव में दिखाई पड़ते हैं। ढोल-नगाड़े, मंजीरे, खड़ताल, बैजो, सारंगी, डमरू, चिमटा, बिन, तुम्बा आदि वाद्य यंत्र की मधुर धुन और राग- रागिनियों की स्वर लहरियाँ कल्चरल फेस्ट में सबको मंत्र मुग्ध कर देती हैं। ढोलक की थाप, घुँघरुओं की रुनझुन-रुनझुन, राग-रागिनियों की स्वर लहरियों और हरियाणवी धुनों और गीतों पर थिरकते छोटे-छोटे बच्चे समा बाँध देते हैं।

हरियाणा के अपने लोक नृत्य हैं जिनमें धमाल, घूमर, झूमर, खोडिया, रासलीला, गुग्गा डांस, छटी नृत्य, तीज नृत्य, चौपाया नृत्य और लूर नृत्य आदि शामिल हैं जो हरियाणा के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित हैं। कल्चरल फेस्ट में लोक नृत्य विधा प्रतियोगिता में एकल नृत्य और समूह लोक नृत्य शामिल किए गए हैं। घूमर-धमाल आदि लोक नृत्यों पर विद्यार्थी जोश से लबरेज होकर लयबद्ध तरीके से थिरकते हैं तो दर्शक उनकी प्रतिभा देखकर दौंतो तले उँगली दबा लेते हैं। इस सांस्कृतिक महोत्सव में ठेठ हरियाणवी गीत- मेरा चूड़ड़ मंगादे, होओ! नणदी के बीरा, पहलम तो पीया दामण सीमा दे फेर जाइये पलटन में, दिल्ली शहर में बिके चुनरिया ओ बालम जी, मेरा नो दांडी का बीजणा; मेरे ससुर जी न दिया घड़वा, मेरे सिर बंटा टोकणी; ससुरा जी लैया दे ऊँटनी मने धार काढ़णी आवे सै आदि की गूँज सुनाई देती है जिन पर हर कोई झूमकर नाचने को मजबूर हो जाता है।

लोक गायन विधा में रागनी और समूह लोकगीत शामिल किए गए हैं। साँझी हमारे ग्रामीण अंचल की धरोहर है, जो घर की सुख-समृद्धि व खुशहाली का प्रतीक है। साँझी लगाने की परम्परा विलुप्त होने के कगार पर है, जिसको संरक्षण प्रदान करने के लिए शिक्षा विभाग ने साँझी बनाओ प्रतियोगिता को शामिल किया है। लघु नाटिका प्रतियोगिता के माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ हरियाणवी बोली में सामाजिक कुरीतियों और समस्याओं जैसे- बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, दहेज-प्रथा, जाति प्रथा, आदि पर कटाक्ष कर उन्हें समूल उखाड़ने का संदेश दिया जाता है।

कल्चरल फेस्ट के अंतर्गत होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए खंड स्तर से लेकर राज्य स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये जाते हैं। हमारा हरियाणा कला एवं संस्कृति की महान विरासत को समेटे





हुए हैं। यहाँ के तीज-त्यौहार निराले हैं, वहीं यहाँ की कला और एवं संस्कृति अपने आप में अनूठी है। परम्पराएँ हमारे जीवन का आधार हैं तो हमारे संस्कार हमारी पहचान। हरियाणा की लोक कथाओं, राग-रागिनियों, लोक नृत्यों और सांगों में यहाँ की गौरवशाली परम्पराओं का वर्णन मिलता है। हमारी लोक कला केवल मनोरंजन प्रधान नहीं है, बल्कि प्रेरणादायक भी है। इसमें सादगी, मेलजोल, भाईचारा, सरलता, साहस, मेहनत और कर्मशीलता आदि गुण समाहित हैं। हरियाणवी संस्कृति हमें सामाजिक सम्बन्धों की गरिमा का पाठ पढ़ाती है, हमें नैतिक प्रेरणा देती है और बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाती है।

कल्चरल फेस्ट जैसी सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में टीम भावना, आपसी समझ, तालमेल, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा आदि गुण विकसित करती हैं। इस प्रकार के सांस्कृतिक उत्सव उनमें नवीन अभिरुचियाँ विकसित करते हैं। ये गतिविधियाँ एक उच्च कोटि का नागरिक बनाने का प्रशिक्षण प्रदान करती हैं, उनमें लोकतांत्रिक गुण विकसित होते हैं। जब वे किसी सहगामी गतिविधि में भाग लेते हैं तो वे समूह में कार्य करना सीखते हैं। सामाजीकरण के साथ-साथ ये सहायक क्रियाएँ उनमें मानवीय गुण भी विकसित करने में सहायक हैं। विद्यार्थी आपस में एक दूसरे के विचारों से परिचित होते हैं तथा एक दूसरे की भावनाओं का आदर करना सीखते हैं। जब विद्यार्थी घर से बाहर निकलते हैं तो वे आत्मविश्वास से लबरेज हो जाते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुण विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि विद्यार्थी बहुत ही ज्यादा ऊर्जावान होते हैं, इन गतिविधियों में व्यस्त रखकर उनकी ऊर्जा का उचित उपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के वर्चस्व के कारण हमारी संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है। हम अपनी



पाठ्य सहगामी क्रियाएँ बालक के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही आवश्यक उपकरण हैं। इनका बालक की बौद्धिक क्षमता व शारीरिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों (प्रतिभा) को पहचाना जाता है। इन शक्तियों की पहचान करके ही एक कुशल अध्यापक एक कुशल मार्गदर्शक की तरह उचित देखरेख व मार्गदर्शन से इन शक्तियों को चरम तक पहुँचा देता है। बीज रूप में जो बच्चों में अलग-अलग प्रतिभा है, उसे पाठ्य-सहगामी क्रियाओं द्वारा ही पहचाना जा सकता है और तभी बालक की प्रतिभा का निखार होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा बालक में सामाजिक गुणों के साथ साथ नैतिक गुणों का भी विकास होता है और उसके समय का सदुपयोग होता है। प्रत्येक अध्यापक को पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विशेष महत्त्व देना चाहिए ताकि मूल प्रवृत्तियों को ऊँचाइयों तक ले जाया जा सके और बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

संजीव कुमार  
प्राध्यापक हिंदी

राजकीय आदर्श संस्कृति विद्यालय  
सैक्टर-20, पंचकूला, हरियाणा



लोक संस्कृति और लोक कलाओं से विमुख हो रहे हैं। आज अनेक युवकों को न तो लोकनृत्य देखने में आनंद आता है, न ही लोक गीत और न ही राग-रागिनियों को गाने और सुनने का चाव रहा। वाद्य यंत्रों को बजाने वाले वादक धीरे-धीरे लुप्त होने के कगार पर हैं। अतः जरूरत

है अपनी धरोहर, लोक कला और संस्कृति को बचाने की। कल्चरल फेस्ट के माध्यम से लोक संस्कृति को संरक्षण मिल रहा है। बच्चे लोक नृत्य, राग-रागिनियों में पारंगत हो रहे हैं जिससे भविष्य में उच्चकोटि के लोक कलाकार तैयार होंगे। कल्चरल फेस्ट के माध्यम से हरियाणवी संस्कृति अपनी अनूठी छाप छोड़ रही है। इस सांस्कृतिक उत्सव के लिए शिक्षक और विद्यार्थी अच्छे खासे उत्साहित नजर आते हैं। यह एक सुखद अहसास है कि भावी पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति से दूर हटकर हरियाणवी संस्कृति को तहेदिल से अपना रही है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह सांस्कृतिक महोत्सव लोक संस्कृति को सहेजकर नए आयाम स्थापित करेगा।

हिंदी प्राध्यापक

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय  
मुर्तजापुर, खंड- पेहोवा, कुरुक्षेत्र, हरियाणा





# अंतर्निहित कला और भाव संप्रेषण का सशक्त माध्यम है-कल्चरल फ़ैस्ट

नीलम देवी



शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान देना ही नहीं, अपितु उसका सर्वांगीण विकास करना होता है। सर्वांगीण विकास से हमारा

अभिप्राय विद्यार्थी के उस नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास से है, जिसके बल पर वह एक अच्छा नागरिक बन सके। दूसरी ओर हमने देखा है कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी सजीव और पालित-पोषित संस्कृति का विशेष योगदान होता है और संस्कृति का प्रचार, प्रसार करने के लिए शिक्षा से अच्छा और कोई भी माध्यम नहीं हो सकता। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग समय-समय पर अनेक सह-शैक्षणिक गतिविधियों, जैसे कि कल्चरल फ़ैस्ट, कला उत्सव, बाल रंग, गीता जयंती महोत्सव आदि का आयोजन करवाता रहता है।

इन सभी गतिविधियों में सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने में कल्चरल फ़ैस्ट का अपना अलग ही महत्त्व है। शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा संचालित यह कार्यक्रम छात्रों में नेतृत्व, बंधुत्व, समानता, समरसता

और मित्रता के गुणों का विकास करने में भी सहायक है और हमारी संस्कृति की जीवंतता को बनाए रखने में पूर्णतया सक्षम है।

यदि हम कल्चरल फ़ैस्ट की बात करें तो इसके अंतर्गत बच्चों के दो समूह बनाकर प्रतियोगिताएँ करवाई जाती हैं-

1. कनिष्ठ समूह: कक्षा 5 से 8 तक और
2. वरिष्ठ समूह: कक्षा 9 से 12 तक।

सर्वप्रथम जब 2017 में इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी, तो इसमें 4 प्रतियोगिताओं को स्थान दिया गया था। 1. लोक नृत्य: एकल और समूह, 2. लोकगीत: एकल और समूह 3. रागनी और 4. साँझी। वर्ष 2022 में पर्यावरण जागरूकता पर आधारित स्किट को भी कल्चरल फ़ैस्ट में शामिल किया गया है। इन सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन विद्यालय, खंड, जिला, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर तक किया जाता है। हरियाणवी परिधान में सजे-धजे बच्चे कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय बहुत ही मनमोहक नजर आते हैं और इन प्रतियोगिताओं में बह-चढ़ कर भाग लेते हैं। बेहतर प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को अच्छा खासा पारितोषिक और प्रमाणपत्र भी शिक्षा विभाग की ओर से दिया जाता है। सारी गतिविधियाँ लाइव म्यूजिक पर ही करवाई जाती हैं। किसी सीडी और स्टैरियो आदि

का प्रयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार गायन में रुचि रखने वाले विद्यार्थी भी अपनी प्रतिभा की छटा से सारे वातावरण को संगीतमय बना देते हैं। हरियाणवी गीत, देशों में देश रे भारत, मत छेड़ बलम मेरे चूंदड़ न, मेरा चूंदड़ मँगा दे हो, हो नन्दी के बीरा, और इन गीतों के साथ बजते हुए ढोल मृदंग, मटका और पेटी अनायास ही





सबके मन को आकृष्ट कर लेते हैं और भारतीय संस्कृति की छटा पूरे वातावरण को रंगीन बना देती है। रंग-बिरंगे दामन, चूँदड़ी और कुर्ते के साथ-साथ कंठी, गलसरी, कड़ी और खेलकड़ा, तागड़ी और बोरला, चुटला आदि में हमारी बालाएँ बहुत सुंदर लगती हैं। धोली, कुर्ता, खंडका, जूती पहने ठेठ हरियाणवी वेशभूषा में सजे लड़के भी कुछ कम सुंदर नहीं लगते हैं। लड़कों के साथ-साथ हमारी बालाएँ भी रागनी गायन में अपनी अद्भुत छटा बिखेरती हैं। बोस इसी साड़ी ल्या देहो, भारत माँ की बेटी हूँ मैं, भगत सिंह कट्टे जी घबरा जया तेरा बंद मकान मैं आदि रागनियों सुनकर दर्शक भाव विभोर हो उठते हैं।

प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की संख्या निश्चित होती है। जलपान और भोजन का प्रबंध भी विभाग के द्वारा ही किया जाता है। प्रतियोगिता के तुरंत बाद बेहतर स्थान पाने वाले प्रतिभागियों के बैंक खाते में पुरस्कार राशि डाल कर पुरस्कृत किया जाता है। प्रतिभागियों को बहुत अच्छी पुरस्कार राशि दी जाती है।

ये सांस्कृतिक गतिविधियाँ एक ओर जहाँ हमारे विद्यार्थियों की छिपी हुई प्रतिभा को उजागर करती हैं, वहीं ये उनमें नई ऊर्जा, जोश, और उत्साह का संचार भी करती हैं। इन सभी गतिविधियों के माध्यम से हमारी युवा पीढ़ी प्राचीन संस्कृति को संजोप हुए हैं जिसके फलस्वरूप ये

युवा प्रतिभागी केवल अपना ही नहीं अपितु हमारे देश के लोक नृत्य, गायन, वादन एवं सांस्कृतिक धरोहर को भी सुरक्षित रखने में अपना योगदान दे रहे हैं। अतः हरियाणा शिक्षा विभाग कल्चरल फ़ैस्ट सहित इन सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सफल आयोजन करके हमारी विरासत को सहेजने में अपनी महती भूमिका निभा रहा है। आशा है भविष्य में ये कार्यक्रम और अधिक नए रंग रूप एवं नए कलेवर में नज़र आएगा।

**संस्कृत प्रवक्ता**

**स्व.सेनानी चौधरी जगराम रावमावि गिगनाऊ  
खंड-लोहारू, जिला- भिवानी, हरियाणा**





# सांस्कृतिक उत्सव: विरासत को बचाने का पावन प्रयास



## मुकेश कुमार



**भा**रत सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध देश है। सांस्कृतिक विविधता के कारण भारत सदैव पूरे विश्व के लिए शोध का विषय रहा है। सांस्कृतिक

उत्सव, स्कूल शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत-सरकार की एक ऐसी पहल है जो विद्यार्थियों में कलात्मक प्रतिभा की पहचान करने में, उसको पोषित करने में, प्रस्तुत करने में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है। सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों में भारत की विविधता में एकता की संस्कृति के प्रति जागरूकता लाने, जीवन को उत्सव बनाने, भविष्य के कलाकारों को विद्यालयी स्तर पर ही मंच प्रदान करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए न केवल संरक्षित करने की जरूरत पर, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में शोध भावना एवं समृद्धि प्रदान करने की भावना पर बल दिया गया है। सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा को उभारने का सशक्त माध्यम हैं।

### हरियाणा सांस्कृतिक महोत्सव 2022-

शिक्षा मंत्रालय द्वारा किए गये सांस्कृतिक उत्थान के भगीरथ कार्य के अंतर्गत विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा भी इसी क्रम में हरियाणा सांस्कृतिक महोत्सव 2022 का आयोजन बड़े ही धूमधाम से हरियाणा की संस्कृति और विरासत में अभिन्न स्थान रखने वाले जिला यमुनानगर में किया गया। यमुनानगर, जहाँ यमुना नदी अपनी अविरल धारा के साथ-साथ सांस्कृतिक समृद्धि की ओर अग्रसर है, उसी प्रवाह में लुप्त हुई सरस्वती

नदी के उद्गम स्थल की पावन धरा बिलासपुर ब्लॉक में राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बिलासपुर के प्रांगण में कला और संस्कृति का पावन संगम हुआ। आदरणीय जिला शिक्षा अधिकारी श्री विनोद कौशिक जी की अध्यक्षता में सांस्कृतिक उत्सव-2022 में ऐसा वातावरण बन गया मानो पूरा हरियाणा राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बिलासपुर में उतर आया।

### साज सज्जा-

आधुनिकता की दौड़ में जहाँ मनुष्य अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूलता जा रहा है, उसको पुनः जागृत करने का अनूठा प्रयास किया गया। विद्यालय द्वार को परम्परागत तरीके से लीप कर उस पर विभिन्न प्रकार की कृतियाँ बनाई गईं, जो मेहमान कलाकारों का स्वागत कर रही थीं।





### बीरबल की हवेली-

प्रांगण में प्रवेश करते ही विद्यालय के भवन को यमुनानगर जिले की ऐतिहासिक विरासत राजा बीरबल की हवेली के प्रारूप के रूप में प्रस्तुत किया गया था। जो आगंतुकों के ऐतिहासिक ज्ञान में संवर्धन के साथ-साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की प्रेरणा दे रही थी।

### चौपाल-

जैसे ही आगे बढ़ते हैं विद्यालय में समय परिवर्तन का गवाह रहा वृद्ध बरगद का वृहद स्वरूप और उसके चारों तरफ बना मंच जो हरियाणा संस्कृति की शान चौपाल का स्वरूप लिए हुए था, सबके ध्यान आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। चौपाल में सजे खाट, मुड़े, घड़े और खाट पर हरियाणवी वेशभूषा में बैठी पंचायत हरियाणा की ऐतिहासिक विरासत, वर्तमान में भी अपनी महत्ता को परिलक्षित कर रही थी।

### खेल गाँव -

बढ़ते कदम सहसा धम से जाते हैं, मोबाइल और वीडियो गेम की शौकीन वर्तमान पीढ़ी को इतिहास बनते विभिन्न खेल जैसे-गिल्ली डंडा, रेहडू, टायर दौड़, पिटदू-गरम, मिट्टी के बने खिलौने की जानकारी दे रहे थे, वहीं अपने जीवन के 30-40 बसंत देख चुकी पीढ़ी को बचपन की मधुर स्मृतियों में खो जाने के लिए मजबूर कर रहे थे। खेल गाँव के मनमोहक दृश्य के साथ साथ पेड़ों में पड़े झूले और झूलों पर झूलती हरियाणवी वेशभूषा में महिलाओं का बना प्रतिरूप सावन के मधुर महीने की याद दिला रहा था।

### चनेटी का बौद्ध स्तूप-

यमुनानगर के स्वर्णिम इतिहास में महात्मा बुद्ध के आगमन का वर्णन मिलता है। यमुनानगर में स्थित चनेटी का बौद्ध स्तूप को तोरणद्वार का प्रतिरूप मानो बौद्ध के शांति और अहिंसा का सन्देश दे रहा था। तोरणद्वार में



प्रवेश करते ही स्तूप दर्शकों के लिए सेल्फी पॉइंट के रूप में ध्यान आकर्षण कर रहा था।

### टोपरा कला का अशोक चक्र-

बौद्ध धर्म के अनुयायी सम्राट अशोक द्वारा अशोक चक्र का जो स्वरूप बनाया गया उसका यमुनानगर के टोपरा कला गाँव से संबंध माना जाता है। यह गाँव एक जंक्शन है, जिसका इतिहास के साथ आध्यात्मिक महत्त्व भी है। इस गाँव की एक सीमा कुरुक्षेत्र को छूती है, दूसरी यमुनानगर को। कुरुक्षेत्र, जहाँ श्रीकृष्ण ने गीता का संदेश दिया, वहीं महात्मा बुद्ध ने अपने समय में भ्रमण किया था।

यहाँ सम्राट अशोक ने अपनी सात राज आज्ञाओं को प्रदर्शित करते हुए स्तंभ स्थापित किया था। यह स्तंभ पूरे अखंड भारत का एकमात्र स्तंभ था, जिस पर उनकी सातों राज आज्ञाएँ लिखी गई थीं। 13वीं शताब्दी में फिरोजशाह

तुगलक स्तंभ को अपने साथ दिल्ली ले गया। वहाँ नाम दिया गया- मीनार-ए-जरीन, जिसका हिंदी में अर्थ है, सोने का स्तंभ। ब्रिटिश काल में एक बार फिर से इस स्तंभ की महत्ता सामने आती है। अभी तक कोई भी इस पर लिखे अक्षरों को पढ़ नहीं पा रहा था। इस दौर में अंग्रेजी स्कॉलर जेम्स ने सबसे पहली ब्राह्मी लिपि और प्राकृतिक भाषा को पढ़ा।

उसी टोपरा कला गाँव में विश्व रिकार्ड में दर्ज अशोक चक्र के प्रतिरूप को विद्यालय प्रांगण में स्थापित किया गया था, जो इतिहास के विद्यार्थियों में टोपरा कला के इतिहास को जानने के लिए उत्सुकता में वर्धन कर रहा था। कार्यक्रम की यादें हमेशा मन में ताजा रहेंगी।

पीआरटी  
राजकीय प्राथमिक पाठशाला बड़ी माजरा  
जिला- यमुनानगर, हरियाणा





# स्नोफॉल ने बढ़ाया '29वें राष्ट्रीय विंटर एडवेंचर उत्सव' का आनंद



## सुभाष शर्मा



29 वॉ राष्ट्रस्तरीय विंटर एडवेंचर उत्सव' इस बार और भी रंगारंग बन गया, क्योंकि मनाली की वादियों में प्रकृति ने भी बर्फबारी कर उसमें अपनी शमूलियत दर्ज की। जब प्रकृति अपनी खुशी बिखेरती है, तो मनुष्य की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। हरियाणा राज्य के 'राष्ट्रस्तरीय विंटर एडवेंचर

उत्सव' का आयोजन 4 फरवरी से 9 फरवरी तक मनाली, हिमाचल प्रदेश में किया गया जिसमें देशभर से 11 राज्यों के एडवेंचर प्रेमियों की प्रतिभागिता रही। इसमें हरियाणा के 22 जिलों के राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया।

## 11 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की भागीदारी-

राष्ट्रस्तरीय एडवेंचर शिविर में हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, तेलंगाना व दिल्ली के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

## सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केन्द्र बना राष्ट्रीय एडवेंचर कैंप

देश के विभिन्न राज्यों के प्रतिभागी जब एक ही स्थान पर हों, तो वह स्थान 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को साकार रूप प्रदान कर देता है। ऐसा ही नज़ारा मनाली में हुए 29वें राष्ट्रस्तरीय विंटर एडवेंचर उत्सव के दौरान देखने को मिला। यहाँ पंजाब के गिद्धे व भेंगड़े की धूम रही, वहीं हरियाणा के घूमर, झूमर व छठी नृत्य, तेलंगाना के धरुपम नृत्य, महाराष्ट्र के लावणी की झलक भी देखने को मिली। सभी ने सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा भारत की एकता व अखंडता को एक







सूत्र में पिरोने का काम किया।

### एकाग्रता, सहनशीलता व त्वरित निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाना

वर्ष 2012 से शुरू हुए इन शिविरों का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों में छिपी विलक्षण प्रतिभा को पहचान कर उन्हें तराशना रहा है। विद्यार्थी अक्सर अकादमिक स्तर पर तो अपनी योग्यता को दिखा देते हैं, परन्तु अन्य गतिविधियों में अपनी पहचान बनाकर उनमें भी आगे बढ़ें, यह भी इन शिविरों का लक्ष्य है। पढ़ाई के अतिरिक्त खेलकूद, साहसिक गतिविधियाँ हमारी मानसिक व बौद्धिक क्षमताओं को बढ़ावा देती हैं। इनसे विद्यार्थी के जीवन में एकाग्रता, सहनशीलता व त्वरित निर्णय लेने की क्षमता

विकसित होती है।

इस बार विद्यार्थियों के लिए यह शिविर यादगार व रोमांचकारी रहा, क्योंकि इनमें से अधिकतर छात्र-छात्राओं ने पहली बार बर्फबारी होती देखी। उन्होंने स्कीइंग जैसी गतिविधि का लुत्फ भी उठाया।

### स्कूली विद्यार्थियों के लिए एडवेंचर गतिविधियों आयोजित करने वाला हरियाणा पहला राज्य-

हरियाणा देश का पहला राज्य है, जहाँ विद्यार्थियों को एडवेंचर शिविरों में ले जाया जाता है। वर्ष 2012 के बाद से लगभग प्रत्येक वर्ष राज्य भर के बच्चों को साहसिक गतिविधियों करवाई जा रही हैं। हरियाणा माध्यमिक शिक्षा विभाग की इस पहल के काफी सार्थक परिणाम भी सामने

## एडवेंचर कैंपों में कराई जाने वाली कुछ गतिविधियाँ -

### ट्रेकिंग-

दुर्गम ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी तथा घाटी मार्गों से पैदल यात्रा करने को ट्रेकिंग कहते हैं। ट्रेकिंग से मनुष्य जुझारू एवं निडर बनता है। मिल कर काम करने से उसमें सहयोग की भावना भी विकसित होती है। रास्ते के पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं नयनभिराम दृश्य व्यक्ति की सारी थकान हर लेते हैं।

### पर्वतारोहण-

पर्वतारोहण ऐसे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है जिनमें कुछ नया अनुभव पाने की ललक होती है। स्कूली विद्यार्थियों को हरियाणा में पर्वतारोहण के अनेक अवसर प्रदान किए जाते हैं।

### स्कीइंग-

स्कीबाज़ी या स्की का खेल बर्फ पर चलने की एक विधि है जिसमें पाँव के नीचे स्की बाँध कर उन्हें बर्फ पर फिसलाया जाता है। आधुनिक युग में यह एक प्रकार का खेल माना जाता है। इसमें ऐसे जूते पहने जाते हैं जो विशेष कुंडियों के जरिये नीचे स्कीओं से जुड़ जाते हैं। स्कीबाज़ी में अक्सर दोनों हाथों में सभारे के लिए एक-एक छड़ी पकड़ी जाती है।

### रॉक क्लाइम्बिंग-

पहाड़ों की चट्टानों पर खेल या मनोरंजन के लिए रस्सी की सहायता से चढ़ने को रॉक क्लाइम्बिंग कहते हैं। इस दौरान व्यक्ति का दिमाग अपने लक्ष्य की तरफ रहता है। जिससे किसी प्रकार का तनाव नहीं रहता है। इसे करने से पूरे शरीर की एक्सरसाइज हो जाती है।

### नदी पार-

यह एक फन गतिविधि है जिसे बच्चे खूब पसंद करते हैं। रस्सी को नदी के दोनों ओर बाँध दिया जाता है और फिर उसे पकड़ कर नदी को पार करना होता है।

### रैपलिंग-

इस स्पोर्ट्स में रस्सी को किसी ऊँची चीज से बाँध दिया जाता है और उसे पकड़ कर आपको ऊपर पहुँचना होता है। यह भी बहुत ही साहसिक खेल है।

### अन्य कौशलों का विकास-

ऐसे कैंप के दौरान व बाद में इन गतिविधियों के बारे में लिखने से लेखन कौशल का विकास होता है। साथ ही फोटोग्राफी का कौशल भी निखरता है।





## मुश्किल नहीं है कुछ भी, अगर ठान लीजिए

माध्यमिक शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा जून 2022 में आयोजित शिविर में प्रदेश भर के लगभग 2,400 छात्र-छात्राओं ने पॉच बैचों में अपने कौशल का प्रदर्शन किया। पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा डॉ. महावीर सिंह ने इस शिविर का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना को स्वयं हिमाचली वेशभूषा को धारण कर बच्चों को सभी संस्कृतियों को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा बनाए चित्रों को भी निहारा तथा उनका हौसला बढ़ाया। उन्होंने कहा कि एडवेंचर शिविर मेधावी छात्रों को अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करते हैं। डॉ. महावीर सिंह ने साहसी होने के गुणों को धारण करके जीवन की ऊँचाइयों को छूने का मंत्र दिया। उन्होंने कहा कि अक्सर साहसी शब्द सुनते ही आँखों के सामने एक हट्टे-कट्टे व्यक्ति की शक्ल आ जाती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि हमें यही सिखाया गया है कि जो व्यक्ति जितना शक्तिशाली है, वह उतना ही साहसी होगा, परन्तु यह सही नहीं। केवल शारीरिक रूप से ही मोटा-तगड़ा होना पर्याप्त नहीं होता, आपको मानसिक रूप से हष्ट-पुष्ट होना चाहिए। तभी आप जो चाहते हैं वह पा सकेंगे और आपके जीवन में आई हुई किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकेंगे। एडवेंचर शिविर विद्यार्थियों में छिपे हुए साहस को तलाशने का भी एक जरिया है।

आ रहे हैं। विद्यार्थियों की विभिन्न गतिविधियों में दी गई सहभागिता के अनुसार उनके अंक दिए गए तथा उसके अनुसार उनका चयन किया गया। जिला स्तरीय एडवेंचर फेस्टिवल 23 नवम्बर से 22 दिसंबर 2022 तक टिककर हिल्स, पंचकूला में आयोजित किया गया, जिनमें से श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रत्येक जिले के 10 लड़के व 10 लड़कियों का मनानी स्थित राष्ट्रीय एडवेंचर फेस्टिवल के लिए चयन किया गया।

### बर्फबारी का लुत्फ : विद्यार्थियों व शिक्षकों की जुबानी

छात्रा कोमल कहती है- अरे सर! क्या नज़ारे थे, क्या बताऊँ। मानो आसमान से सफेद मोती धरती पर अपनी चादर बनाने के लिए गिर रहे थे। मानो सारे तारे ही इस

धरा पर आकर लेट गए हों। जीवन में पहली बार बर्फ गिरते हुए देखी। सुना व पिक्चरों में देखा जरूर था, पर जब इस नज़ारे को खुद महसूस किया, तो कहना ही क्या था। उस समय न केवल शिक्षा विभाग, शिक्षकों व अभिभावकों के प्रति कृतज्ञता का भाव आया कि इतना सुंदर नज़ारा दिखाने के लिए कैसे आभार व्यक्त करें। बर्फ के फाहे मानो बता रहे थे कि कोमल स्पर्श कर प्रकृति कैसे हम सब से अपना प्यार जताती है। मनानी शिविर में मनोहारी पल वह रहा जब सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों को सोलांग वैली जाने का मौका मिला। बर्फ की बिछी हुई चादर पर लेटना व स्कीइंग करना सबके लिए अनूठा खेल था। रॉक कलाइंबिंग इत्यादि का अनुभव



तो पहले हो चुका था, पर स्कीइंग ने हमारे लुत्फ को दुगुना कर दिया।

दर्पण मदान, शिक्षक, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक



विद्यालय, एमपी रोही ने कहा कि बस में बैठते हुए फरतेहाबाद के अतिरिक्त सिरसा व फरीदाबाद के बच्चों के साथ मुलाकात हो गई। छोटी मुलाकात कब रिश्ते बना जाती है, यह इस एडवेंचर शिविर के बीत जाने के बाद ही पता चला। यह शिविर जिंदगी भर के लिए मेरी जिंदगी की किताब के पन्नों पर अपनी जगह बना गया।

हिसार जिले के एक विद्यालय की छात्रा कंचन ने अनुभव साँझा करते हुए कहा कि ट्रेकिंग के दौरान उन्हें गायत्री मंदिर तक जाने का अवसर मिला। यह मंदिर पत्थरों से बना हुआ है। पता चला कि अपने अज्ञातवास के दौरान पांडव यहीं ठहरे थे। इसी मंदिर में 500 वर्ष पुराना पेड़ देखकर वे सब चकित रह गए।

सिमरनजीत, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुहला ने कहा कि विद्यालय में पढ़ते हुए शिक्षक व छात्र का रिश्ता पढ़ने और पढ़ाने तक सीमित होता है, परन्तु एडवेंचर शिविर ने तो सब कुछ बदल कर रख दिया। यहाँ शिक्षक शिक्षक नहीं, मित्र, सखा और अभिभावक बन गए। अपनी संतान की भाँति हमारी देखरेख। खाना खाने से लेकर हमारी छोटी-छोटी जरूरतों पर ध्यान दिया।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नाहर कोठी, बरवाला की शिक्षिका रीना ने अपने अनुभवों को शब्दों में उकेरते हुए कहा कि इस शिविर में भाग लेने वाले अधिकतर छात्र-छात्राएँ ऐसे परिवारों से रहे जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। परंतु जो अनुभव व लम्हे इन बच्चों ने इस शिविर में सीखे व कैद किए, वे अन्य विद्यार्थियों को मेहनत, लगन का पाठ भी पढ़ाएँगे और बताएँगे कि मेधावी विद्यार्थियों के लिए हरियाणा सरकार व शिक्षा विभाग किस तरह से सोचता है।

अंजू देवी, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, उचाना, जींद की छात्रा ने अपने अनुभव साँझा करते हुए कहा कि मनाली पहुँचकर उसकी तबीयत बहुत ही ज्यादा खराब हो गई थी। उसे अस्पताल भी ले





जाना पड़ा। परंतु अस्पताल में जिस प्रकार से माध्यमिक शिक्षा विभाग की मॉनीटरिंग टीम के सदस्यों व जींद सहित अन्य शिक्षकों ने उसका ख्याल रखा, वह उसे कभी भूल नहीं सकती। यात्रा पर जाने पर ऐसे अनुभव में जब शिक्षकों से अभिभावकों जैसा प्यार व लगाव मिलता है, तो ऐसे लोग सदा के लिए मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं।

### फेस्टिवल का पंचकूला में रंगारंग समापन-

29वें नेशनल एडवेंचर फेस्टिवल का पंचकूला के सैक्टर- 5 स्थित इंद्रधनुष ऑडिटोरियम में रंगारंग समापन हुआ। हरियाणा के पूर्व मुख्य सचिव तथा नेशनल एडवेंचर क्लब (भारत) चंडीगढ़ के कार्यकारी अध्यक्ष एससी चौधरी ने कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। हरियाणा के राज्य निर्वाचन आयुक्त और क्लब के निदेशक धनपत सिंह ने गैस्ट ऑफ ऑनर के तौर पर कार्यक्रम में भाग लिया।

समापन समारोह के दौरान रंगारंग कार्यक्रमों की धूम रही और सभी को कई राज्यों की संस्कृति को जानने का मौका मिला। कार्यक्रम के दौरान तमिलनाडु से सूर्य प्रकाश और उनकी टीम द्वारा तमिल संस्कृति से जुड़ा करुप्पासामी डांस, वेस्ले एंड टीम व श्याम एंड टीम द्वारा ग्रुप डांस और संध्या द्वारा सोलो डांस सिलमबम प्रस्तुत किया गया। जैजी बाजवा भँगड़ा टीम ने पंजाबी गाने पर भँगड़ा किया जबकि रवीन्द्र मेहरा ने हरियाणवी रागनी प्रस्तुत की। मोहम्मद मंसूर ने टिगर डांस, जबकि उडीसा से रवि और भोपाल से अमन चिंतमन ने सोलो डांस पेश किया। गुजरात से ममता वर्मा की टीम ने गुजराती गरबा किया। वहीं हरियाणा राज्य के स्कूली विद्यार्थियों ने भी अपनी प्रस्तुतियों द्वारा समों बाँधा। प्रदेश के सभी जिलों से भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र व

शील्ड देकर उनके हौसलों को नई उड़ान देने के लिए प्रेरित किया।

### पंचकूला में लगा था जिला स्तरीय एडवेंचर शिविर-

इससे पूर्व 23 नवम्बर से 22 दिसंबर 2022 तक साहसिक गतिविधियों का जिला स्तरीय शिविर पंचकूला

के टिक्कर हिल्स में लगाया गया। साहसिक गतिविधियों के इस शिविर में 22 जिलों के लगभग 2640 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

### एडवेंचर पोर्टल पर प्रतिभागियों का चयन

पहली बार साहसिक गतिविधियों के इस शिविर के लिए विभाग द्वारा बनाये गए एडवेंचर पोर्टल द्वारा विद्यार्थियों व उनके शिक्षकों का चयन किया गया। नौवीं से बाहरवीं कक्षा में पढ़ रहे उनके खंड, जिला, राज्य, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों में जिला व प्रदेश का नाम रोशन करने वाले तथा अकादमिक तौर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का चयन किया गया। चयन प्रक्रिया निष्पक्ष हो तथा हर सुपात्र विद्यार्थी को इसका भाग बनने का अवसर मिले इसके लिए कुछ मापदण्ड भी रखे गए। जिसमें 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेने वाले विद्यार्थियों की प्रतिशत के अनुसार 1 से 5 अंकों की ग्रेडिंग की गई। वहीं विद्यार्थियों की अन्य गतिविधियों जिनमें विद्यार्थी ने खण्ड, जिला व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया हो, को प्राप्त प्रमाण पत्र के आधार पर भी ग्रेडिंग में अंक दिए गए। इस तरह से हर उस विद्यार्थी, जिसने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, को इस शिविर का भाग बनने का अवसर मिला है। इसी पोर्टल के माध्यम से 2640 विद्यार्थियों का चयन हुआ, जो राज्य स्तरीय शिविर का भाग बने। वहीं विभिन्न जिलों से शिक्षकों का चयन भी पोर्टल के माध्यम से ही किया गया। शिक्षकों के विद्यालय के परीक्षा परिणाम व अन्य उपलब्धियों के आधार पर ही चयन किया गया।



### व्यावसायिक शिक्षा पहली बार एडवेंचर का भाग-

पहली बार व्यावसायिक शिक्षा दे रहे वोकेशनेल शिक्षकों को भी शिविर में विद्यार्थियों को ब्यूटी एंड वैलनेस





व पेशेंट केयर जैसे मुख्य व्यवसायों का प्रशिक्षण देने के लिए शिविर का भाग बनाया गया, जिसका मकसद कौशल विकास द्वारा स्वरोजगार के लिए आज की पीढ़ी को तैयार करना है। जिला स्तरीय एडवेंचर शिविर टिक्कर हिल्स, पंचकूला में दो स्थानों पर लगाया गया। एक शिविर हरियाणा टूरिज्म एडवेंचर क्लब व दूसरा नेशनल एडवेंचर क्लब की देखरेख में लगाया गया। जैसे ही विद्यार्थी टिक्कर हिल्स स्थित शिविर में पहुँचे तो सबसे पहले सभी प्रतिभागियों को ट्रैक सूट, पानी की बोतल व बैग दिया गया। साहसिक गतिविधियों में भाग लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी का रहने व खाने पीने का सारा प्रबंध माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा किया गया।

### गतिविधियाँ-

शिविर के दौरान विद्यार्थियों को प्रातः योग, ट्रैकिंग, कर्मांडो नेट, आर्चरी, रॉक क्लाइंबिंग, रैपलिंग, बर्मा ब्रिज, पलाइंग फॉक्स, पैरेलेल रोप, लैंडर क्लाइंबिंग, जुमरिंग, एयर गन शूटिंग, लोकल साइट सीइंग, टेंट पिचिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट व कैम्प फायर आदि करवाया गया।

### वोकेशनल टीचर्स के अनुभव-

व्यावसायिक प्रशिक्षकों व प्रतिभागियों को ब्यूटी एंड वैलनेस के तहत मेहंदी, नेल आर्ट, ब्लीच, फेशियल आदि की विस्तृत जानकारी को वोकेशनल टीचर ने प्रैक्टिकल करके दिखाया। विद्यार्थियों ने भी इन कलाओं को सीखा व अपने सहयोगी छात्रों पर करके देखा। विभाग द्वारा मेकअप, नेलआर्ट, मेहंदी व बालों के सौंदर्यीकरण से सम्बन्धित प्रसाधन-सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। पहली बार एडवेंचर कैम्प में व्यावसायिक प्रशिक्षण देने पर वोकेशनल टीचर गरिमा ने बताया कि यहाँ उन बच्चों को ब्यूटी एंड वैलनेस के बारे बताने का अवसर मिला है जो इस बारे में बहुत कम जानते हैं। उन्हें अपनी त्वचा के बारे तथा ब्यूटी संबंधी मिलने वाले विभिन्न उत्पादों के बारे बताया कि किस प्रकार बाजार में उपलब्ध नकली उत्पादों से बचाव करना है। उन्होंने कहा कि लड़कों ने भी पूरा उत्साह दिखाया है। छात्रों में इन्हें सीखने के लिए बहुत उत्साह नज़र आया। महिला शिक्षकों ने बताया कि सोचा था कि घर जाकर फेशियल करवाएँगी, पर शिविर में यह सुविधा पाकर बहुत खुशी हुई। रेणुका कम्बोज, वोकेशनल टीचर ने बताया कि सरकार द्वारा व्यावसायिक क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए जो कदम हैं, उससे बहुत से बच्चे स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। शिवम ने बताया कि यहाँ नेल आर्ट और मेहंदी का अभ्यास करवाया गया, जिसमें उसने भी भाग लिया। इससे इसे भविष्य में व्यवसाय के रूप में अपनाने की सोच मजबूत हुई है। लड़कियों ने बताया कि हालाँकि विद्यालय में मेहंदी लगाने का मौका मिलता रहता है, परन्तु यहाँ पर ब्यूटी से संबंधित अन्य विधाओं को भी सीखा, वो बहुत लाभकारी रहा। वहीं पेशेंट केयर में अस्वस्थ होने के समय मे फर्स्ट एड देकर कैसे स्वयं का तथा दूसरों का खयाल रखना है, बारे में वोकेशनल टीचर्स ने समझाया।



## सर्वांगीण विकास के लिए एडवेंचर गतिविधियाँ काफी महत्वपूर्ण

स्कूल स्तर पर आयोजित एडवेंचर कैम्प बच्चों में छिपी प्रतिभा को बाहर निकाल कर उनमें साहस और रोमांच की भावना का विकास करते हैं। इससे बच्चों में निर्णय लेने और सीमित संसाधनों में जीवनयापन आदि गुण विकसित होते हैं और बच्चे जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार होते हैं। इसी उद्देश्य से माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा प्रदेश भर के छात्र-छात्राओं के लिए साहसिक गतिविधियों के शिविर लगाए जाते हैं। विद्यार्थी पूरे मनोयोग से साहसिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। निश्चित तौर पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए ये काफी महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं।

-डॉ. अंशज सिंह

निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा



### प्रकृति का संरक्षण-

इस शिविर में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, घासेड़ा, मेवात के बाहरियों के एक छात्र ने बताया कि पहली बार पहाड़ी क्षेत्र में आने का मौका मिल रहा है। यहाँ आकर सीखने को यही मिला कि प्रकृति का संरक्षण बहुत ही जरूरी है। पेड़-पौधों का जितना ध्यान हम रखेंगे, उतना ही प्रकृति हमारा रखेगी। आरोही मॉडल सीनियर सेकंडरी स्कूल, उद्याना, जींद के छात्र साहिल व मोहित ने बताया कि जब घर से चले थे तो लगा था कि एक टूर पर जा रहे हैं, पहाड़ियाँ देखेंगे। परन्तु यहाँ आकर जब गतिविधियों में भाग लेना आरम्भ किया तो पता चला कि इस शिविर का तो मकसद ही कुछ और है। हमारी ऊर्जा को नई दिशा मिली है, हमने बढ़ रही ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने की महत्ता को समझा है। आरोही मॉडल स्कूल, घासोरुद, के रसायन-

शास्त्र के प्रवक्ता प्रवीण कुमार ने कहा कि उन्होंने तो कभी सोचा नहीं था कि कभी एडवेंचर शिविर में आएँगे। पहली बार पोर्टल के माध्यम से चयन हुआ है, उससे बच्चों को नए अवसर मिलेंगे। निःशुल्क सुविधा मिलने से इनके हौसले और बुलंद होंगे। उन्हें भी आभास हुआ कि उनका बचपन लौट आया है। राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकंडरी स्कूल, बियाना, इंदी करनल की उमा शर्मा ने बताया कि उनके पिता नहीं हैं। माँ के सहयोग से यहाँ आना सम्भव हुआ है। अभी यहाँ आकर बहुत कुछ नया सीखने को मिल रहा है। श्रेष्ठ प्रदर्शन देकर वे अपने पिता को यह पहली एडवेंचर यात्रा समर्पित करना चाहती हैं।

अंग्रेजी प्रवक्ता

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय  
टिक्कर हिल्स, पंचकूला





# राष्ट्रीय एकता की अवधारणा को मूर्त रूप दिया नेशनल इंटीग्रेशन कैम्प ने



पूरे भारत की शालियों में शामिल होने का अवसर मिला। शानदार अनुभव रहा, दूल्हा-दुल्हन सजाई गईं, मालाएँ पहनाई गईं और नीचे बैठे दर्शकों ने तालियाँ बजाकर पूरे भारत का एक ही प्रांगण में स्वागत किया।

जलवे दिखाने के लिए तत्पर स्टेट एक्सपोजिशन की तैयारी खूब थी और सभी ने एक्सपो में अपने स्टेट की झॉकियाँ, भूगोल, भाषायी जानकारी साँझा की। संस्कृतियों व रीति-रिवाजों का अनोखे संगम के साथ विभिन्न राज्यों के बच्चों द्वारा अपनी-अपनी संस्कृतियों के प्रदर्शन की धूम रही।

जननायक चौधरी देवीलाल विद्यापीठ की एमडी डॉ. शमीम शर्मा कार्यक्रम की मुख्यातिथि रहीं। उनके साथ प्राइमरी विभाग से प्राचार्य कमलजीत विर्क भी शरीक हुए।

चाँद की मध्यम रोशनी से धवल टेंट चमक रहा था। चारों तरफ फैली हुई रोशनी इस समारोह को भव्य बना रही थी। लग रहा था जैसे कई चाँद धरती पर उतर आए हों और चाँद को चंदा मामा कहने वाले बच्चे मानो उसी चाँद के कंधों पर चढ़ कर अठखेलियाँ कर रहे हों।

इससे पूर्व कैम्प लीडर असिस्टेंट डायरेक्टर शिवांगी सक्सेना के मार्गदर्शन में एसओसी रोमा सपरा, एसओसी नीलम गिल, डॉ. भूप सिंह, डॉ. इंद्र सेन, सुखदेव सिंह दिल्ली, संदीप गुप्ता, मंजुबाला द्वारा स्काउट गाइड पल्लेग सेरैमनी की गईं। मंच-संचालन की जिम्मेवारी नीलम गिल ने बखूबी निभाई। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए

## डॉ. सिकंदर सिंह सिधू



एकीकरण शिविर का आयोजन कर रहा था। दोपहर तक 15 टीमों इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहुँचीं। प्रथम दिन के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता जिला शिक्षा अधिकारी ने की व मुख्यातिथि के रूप में एडीसी महोदय उपस्थित हुए। रंगारंग कार्यक्रमों के साथ शिविर की शुरुआत की गई।

## दूसरा दिन (23 नवंबर, 2022)

दूसरे दिन की प्रतियोगिताओं में स्टेट एक्सपोजिशन और शादी की प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। एक ही प्रांगण में

ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं?

तुम ने मेरा कौटों भरा बिस्तर नहीं देखा।

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंजिल पर नज़र है,

आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

कोरोना के बाद सिरसा को किसी बड़े उत्सव का इंतज़ार था और कई महीनों से उसकी तैयारियों में जुटी भारत स्काउट्स व गाइड्स जिला एसोसिएशन सिरसा की टीम मन में उत्साह के साथ तैयारियाँ कर रही थी। अब 22 से 26 नवंबर, 2022 तक होने वाले एकीकरण शिविर की वह घड़ी आन पहुँची थी, जब एक ही स्थान पर पूरे भारत की तस्वीर देखने वाले थे।

दिन की सुबह नई उम्मीदों के साथ हमें कंधे से पकड़कर अपने फर्जों को अदा करने के लिए प्रेरित करने लगी। हम अपनी स्काउट ड्रेस पहन कर प्रातः 7:30 बजे मीटिंग में हाज़िर हो गए। श्री सुखदेव सिंह, श्री इंद्रसेन, मैडम उषा, मैडम मंजु और बहुत सारे साथी वहाँ बैठे कार्यक्रम की तैयारियों का जायज़ा ले रहे थे।

## पहला दिन (22 नवंबर, 2022)

सिरसा लगभग 4 साल में दूसरी बार राष्ट्रीय





सरपंच अवतार सिंह मलिकपुर, मलकीत सिंह खोसा, जगतार सिंह, पूर्व सरपंच रुगुअना, सुधांशु, जेसीडी, शाह सतनाम कॉलेज प्रिंसिपल गीता मोंगा भी शामिल हुए।

दोपहर के कार्यक्रम में माननीय जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी आत्म प्रकाश मेहरा ने संबोधित किया। सचिव सुखदेव सिंह दिल्ली ने उन्हें स्कार्फ पहना कर सम्मान दिया। इस अवसर पर श्री मेहरा ने कहा कि हम भाषा, संस्कृति, कला, पहनावे में अलग होते हुए भी एक हैं। हम सबसे पहले भारतीय हैं, बाद में हम हरियाणवी या पंजाबी हैं।

### कैंप का तीसरा दिन

कैंप के अगले दिन उत्साह देखते ही बनता था। पूरा शहर लघु-भारत को देख रहा था। कई परिधानों में, हम सब भारतवासी हैं, हम सब भारतीय हैं, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ आदि नारे लगाते हुए प्रतिभागियों को देखने के लिए पूरा शहर अपनी दुकानें व काम-धाम छोड़कर



सड़कों पर एकत्रित हो गया। सिरसा के लिए पहला मौका था जब एक छोटे से शहर में लघु-भारत उमड़ आया था।

संध्या के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में चीफ ज्यूडिशल मजिस्ट्रेट अनुराधा ने शामिल होकर इस कार्यक्रम को और शानदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैडम अनुराधा ने पूरे कार्यक्रम का आनन्द लिया।

### फूड प्लाजा दिन-

अगला दिन फूड प्लाजा का दिन था। तरह-तरह के व्यंजनों को तैयार करने के लिए बच्चे लकड़ियाँ इकट्ठी कर रहे थे, मसाले पीसे जा रहे थे, आटा गूँथा जा रहा था, प्रदर्शनियाँ शुरू हो गई थीं। बच्चे अपने-अपने राज्यों की वेशभूषाओं में नजर आ रहे थे। कहीं पर बिहार और कहीं मध्य-प्रदेश, कहीं यूपी, कहीं पंजाब, कहीं चंडीगढ़ और कहीं हिमाचल अपनी तैयारी करता दिखाई दे रहा था।

शाम के समारोह में नबौर मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक सिरसा डॉ. अर्पित जैन पधारें। उनके साथ भारत स्काउट एंड गाइड के निदेशक राजकुमार कौशिक, भारत स्काउट गाइड के राज्य कोषाध्यक्ष व वाइस चांसलर डॉ. राकेश गुप्ता, कैंप लीडर व सहायक निदेशक शिवांगी सक्सेना, अरूप सरकार, राज्य संगठन आयुक्त एलएस वर्मा तथा जिला शिक्षा अधिकारी संत कुमार बिस्नोई भी मंच पर उपस्थित रहे।

जिला शिक्षा अधिकारी ने अपने संबोधन में सभी मेहमानों व राष्ट्रीय तथा राज्य मुख्यालय के अधिकारियों का धन्यवाद किया। इस समारोह में राष्ट्रीय मुख्यालय से सहायक निदेशक व कैंप लीडर शिवांगी सक्सेना, दर्शना पावस्कर, संजीव अग्रवाल, संगठन आयुक्त एलएस वर्मा, संगठन आयुक्त सिरसा डॉ. इंद्रसेन ने भी संबोधित किया।

हरियाणा की टीम को ओवर ऑल विजेता घोषित किया गया। मुख्य अतिथि ने सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों, स्काउट्स, गाइड, रोवर, रेंजर, इयूटीएरत अध्यापकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

सभी टीमों अपना-अपना सामान समेटने में लगी थी। जिंदगी का नियम है- चलते रहना, आगे बढ़ते जाना। फिर से किसी जगह एकत्रित होने के वादों के साथ यह कैंप भी समाप्त हो गया। मगर जिंदगी के कार्यक्रम कभी धमते नहीं। सामान के साथ-साथ यादों को भी समेटा जा रहा था। स्टेज पर डॉ. इंद्रसेन के आँसुओं ने पूरे पंडाल की आँखों को नम कर दिया।

लिखें हैं कुछ अफसाने नेक इरादों से

अभी मंज़िल पर इतिहास लिखना बाकी है।

प्रवक्ता पंजाबी

रावमा विद्यालय देसू मलखाना

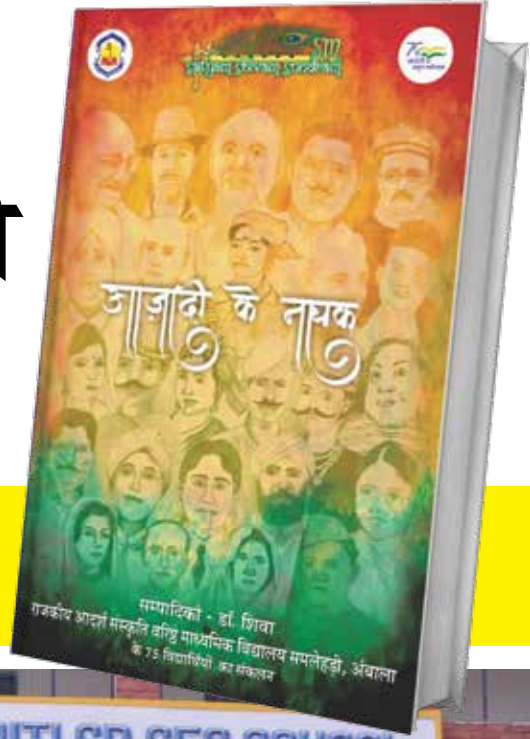
जिला सिरसा, हरियाणा





# विद्यार्थियों ने लिखीं शहीदों की शौर्य गाथाएँ

आज़ादी के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष्य में स्कूली विद्यार्थियों ने लिखी 'आज़ादी के नायक' में 75 बलिदानियों की जीवनियाँ



राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय समलेहड़ी, अंबाला के 75 विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्र की आज़ादी के अमृत-महोत्सव (75वीं वर्षगांठ) में आज़ादी के 75 नायकों के ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित एक पुस्तक 'आज़ादी के नायक' लिखी गई, जिसमें विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा इन स्वतंत्रता सेनानियों के आज़ादी की लड़ाई में किए गए योगदान का उल्लेख किया गया। इंटरनेट व अनेक पुस्तकालयों में उपलब्ध विभिन्न

पुस्तकों से आधार-सामग्री ली गई।

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें स्वतंत्रता-संग्राम के अनेक बलिदानियों की गाथाएँ एक स्थान पर संकलित हैं। कक्षा सातवीं से कक्षा बारहवीं के बच्चों ने इसके लिए काफी मेहनत की। भविष्य में ये बच्चे भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गौरव गाथा पर रिसर्च करने के योग्य बन सकेंगे और साथ ही भारत माता की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त भूतकाल में

भारत के शासकों द्वारा हुई गलतियों को समझते हुए उनसे अवगत होते हुए देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने में सफल होंगे और अपने भारतीय होने पर गर्व की अनुभूति करेंगे। इसके साथ-साथ प्रत्येक स्वतंत्रता सेनानी का चित्रांकन भी विद्यालय के बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी राजीव द्वारा किया गया। विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं कलात्मक वातावरण में प्रोत्साहित करना शिक्षकों का परम कर्तव्य है, जो उनकी सकारात्मक सोच, उनके







पठन-लेखन को हर तरह से प्रभावित करने का एक सशक्त माध्यम है।

### माननीय असीम गोयल एमएलए द्वारा विमोचन-

29 नवंबर, 2022 को राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय समलेहड़ी में 'आजादी के नायक' का विमोचन समारोह आयोजित किया गया। पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि माननीय श्री असीम गोयल जी एमएलए अम्बाला शहर के कर-कमलों से हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने इस कार्य को एक बहुत बड़ी उपलब्धि बताया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष श्री राजेश बलौड़ा, जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुधीर कालड़ा, उप जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती रेनू व वीना सिंघानिया भी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त साहित्यकार श्री प्रदीप शर्मा स्नेही, सभी मॉडल संस्कृति विद्यालयों के प्रधानाचार्य, समलेहड़ी गाँव के नव-निर्वाचित सरपंच एवं विद्यालय के सभी स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे। मंच-संचालन अंग्रेजी प्राध्यापक श्री जितेंद्र व हिंदी अध्यापिका मंजू रानी ने किया। सभी स्टाफ सदस्यों की इस कार्यक्रम में विशेष भूमिका रही। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा हरियाणवी लोक नृत्य की रंगारंग प्रस्तुति दी गई, जिसे सभी ने सराहा। कार्यक्रम का समापन विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री नरेश कुमार मुद्गल द्वारा माननीय अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए किया गया।

4 दिसंबर, 2022 को कुरुक्षेत्र में आयोजित गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर हरियाणा ग्रंथ



अकादमी के निदेशक डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने विद्यालय के प्रधानाचार्य, पुस्तक की संपादिका डॉ. शिवा एवं 75 विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न एवं मेडलों द्वारा सम्मानित किया। इस प्रकार विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाया गया। वे भविष्य में ऐसे और कार्य करने के लिए प्रेरित हुए।

7 दिसंबर, 2022 को राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय समलेहड़ी के प्रधानाचार्य श्री नरेश कुमार मुद्गल एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा यह पुस्तक माननीय श्री अनिल विज जी को भेंट की गई। माननीय अनिल विज जी द्वारा 12वीं कक्षा के छात्र राजीव को आजादी के 75 नायकों का चित्रांकन करने हेतु 20,000 रुपये की धनराशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की, जो विद्यार्थी राजीव और समस्त विद्यालय के लिए गौरव और हर्ष का विषय बनी।

सरकारी विद्यालय में 88 विद्यार्थियों द्वारा एक ही वर्ष में स्वरचित कविताओं का संग्रह 'नन्हे पंख' एवं 75 स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी पर आधारित पुस्तक 'आजादी के नायक' का प्रकाशन न केवल अपने आप में एक अनोखी पहल है, अपितु यह अन्य विद्यालयों के लिए भी एक प्रेरणा है। निश्चित तौर पर ऐसे प्रयास विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साहित्य जगत् में भी विद्यालय के विद्यार्थियों के इस प्रयास को सराहना मिली।

डॉ. शिवा

ललित कला प्राध्यापिका

राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय समलेहड़ी, अंबाला





## बाल-सारथी

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

## विज्ञान पहेली

- प्रश्न-1 शुद्धतम सोने की शुद्धता कितनी होती है?  
उत्तर- 24 कैरेट
- प्रश्न-2 सबसे कठोर पदार्थ कौन सा है?  
उत्तर- हीरा
- प्रश्न-3 गुब्बारों में कौन सी गैस भरी होती है?  
उत्तर- हिलियम
- प्रश्न-4 विद्युत धारा किस के द्वारा मापी जाती है?  
उत्तर- एमीटर द्वारा
- प्रश्न-5 प्रकाश वर्ष किस का मात्रक है?  
उत्तर- दूरी का
- प्रश्न-6 प्रोटीन का पाचन कहाँ होता है?  
उत्तर- छोटी आँत में

अमित शर्मा

प्रवक्ता-भौतिक विज्ञान

रावमा विद्यालय सरावौं

खंड- साढ़ौरा, जिला-यमुनानगर

हरियाणा

## प्रभात वेला

नए दिवस की नई कहानी।  
आई लेकर सुबह सुहानी।  
समय सुबह का लगे सलोना।  
खोल आँख अब छोड़ बिछौना।  
उपवन की शोभा मस्तानी।  
नाच रही है तितली रानी।  
फुदक-फुदक कर डाली-डाली।  
कूक रही है कोयल काली।  
चीं-चीं चहके चिड़िया रानी।  
करे गिलहरी भी शैतानी।  
सुन्दर सुमन रिखले उपवन में।  
भरते भव्य भाव ये मन में।  
तरुवर-पौधे धरती-धानी।  
सूरज की करते अगवाणी।

उदय मेघवाल 'उदय'

मधुसूदन स्कूल के पास,

कमधज नगर

निम्बाहेड़ा, जिला- चित्तौड़गढ़

राजस्थान

## - तुम्हारी यामिका दीदी

## समय का खेल

एक मिनट में सेकेंड साठ ।  
ध्यान रखो तुम होंगे ठाठ ॥  
साठ मिनट में घंटा एक ।  
करो काम तुम दिन प्रत्येक ॥  
24 घंटे के रात और दिन ।  
अच्छे से अब तुम लो गिन ॥  
सप्ताह में दिन होते सात ।  
सात सुरों की मीठी बात ॥  
बारह महीने का बनता साल ।  
रोज़ पढ़ो और करो कमाल ॥  
साल में आती ऋतुएँ छह ।  
खुशी-खुशी तू हरदम रह ॥

दलवंती

राजकीय कन्या प्राथमिक

पाठशाला

भदानी, जिला- झज्जर, हरियाणा

## पहेलियाँ

1- भन-भन-भन भन्नाते हैं  
न जाने क्या गाते हैं।  
इंजेक्शन सी सुई चुभा कर  
खून घूस उड़ जाते हैं।

2- हम चौपाए व चौकन्ने  
स्वामी-भक्त होते हैं।  
हम पहरेदारी भी करते  
मालिक जब सोते हैं।

3- मेरे खाली पेट में काली  
मिट्टी भर दी जाती  
पौधा बढ़ता फूल महकते  
कली-कली मुस्कताती।

4- मैं हूँ पीला फूल निराला  
आप सभी का देखा-भाला  
डंठल पर घूमा करता हूँ  
बस सूरज का मुख तकता हूँ।

5- इस पौधे की सभी पतियाँ  
दिखती एक कलश जैसी  
कीट अगर कोई आ जाए  
खाकर उसे पचा लेती।

उत्तर - 1- मच्छर 2- कुत्ता 3- गमला 4-  
सूरजमुखी 5 - कलश पादप (कीटभक्षी पौधा)

राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव

शारदा निवास

आर एम पी नगर फेज-1

विदिशा, मप्र-464001

## स्कूल को जानो बस एक क्लिक पर

अब एक क्लिक पर आप अपने प्रदेश के किसी भी स्कूल के बारे में सभी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक स्कूल ( कक्षा 1 से 12 तक ) को एक ग्यारह अंकीय विशिष्ट पहचान अंक प्रदान किया गया है जिसे DISE कोड कहते हैं। DISE जिसका फुल फार्म है - District Information System For Education है। ग्यारह अंकीय कोड में प्रथम दो अंक राज्य, द्वितीय दो अंक जिला, तृतीय दो अंक विकास खंड, चतुर्थ तीन अंक संबंधित ग्राम और अंतिम दो अंक विद्यालय को व्यक्त करते हैं। DISE कोड को <http://udiseplus.gov.in> वेब साइट पर दर्ज कर किसी भी स्कूल की जानकारी एक क्लिक पर प्राप्त कर सकते हैं। बच्चो! आज ही अपने स्कूल का UDISE कोड अपने प्रिंसिपल जी से मालूम करो और अपने स्कूल की पूरी जानकारी प्राप्त करो।

UDISE कोड मालूम नहीं है तो भी आप किसी भी स्कूल की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। बस आपको स्कूल का नाम और एरिया का पिन कोड मालूम होना चाहिए।

तो बच्चो! अब देर किस बात की अपने स्कूल का पूरा व्योरा मालूम करो बस एक क्लिक पर।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार

रावगंज, कालपी, जिला जालौन

उत्तरप्रदेश, पिन कोड- 285204





## दुखी चिड़िया

दुखी हो रही चिड़िया रानी,  
किसे सुनाए अपनी कहानी?

सखी सहेली सारी मिलकर,  
दाना चुगने जाती थीं।  
दाना खाकर और लेकर,  
फिर शाम को वापिस आती थीं।  
अपने बच्चों को सुनानी,  
सुन्दर एक कहानी।  
दुखी हो रही चिड़िया रानी,  
किसे सुनाए अपनी कहानी?

नहीं रही वो सखी सहेली,  
किसके संग में जाऊँ?  
नहीं रहे वे बाग-बगीचे,  
जहाँ बैठ मैं गाऊँ।  
मिलती नहीं जगह घरों में,  
नहीं पेड़ की टहनी।  
दुखी हो रही चिड़िया रानी,  
किसे सुनाए अपनी कहानी?

आशा है अब तुम बच्चों से,  
ज्यादा पेड़ लगाओ।  
हरा-भरा धरती को करके,  
सबका जीवन महकाओ।  
खुश होकर फिर सारे पक्षी,  
बोलेंगे मीठी वाणी।  
नील गगन में उड़ पाएगी,  
खुश हो चिड़िया रानी।

कविता

## चिड़िया-घर

आओ बच्चो तुम्हें कराएँ,  
चिड़िया-घर की सैर।  
धूम-धूमकर चिड़िया-घर में,  
थक जाते हैं पैर।

हाथी, घोड़ा, शेर और चीता,  
यहाँ पर होते सारे।  
रंग-रूप भी अलग-अलग हैं,  
होते न्यारे-न्यारे।

कोई पशु मिट्टी पर रहते,  
तो कुछ पानी में रहते।  
जितने भी हैं वहाँ पर पक्षी,  
सब पिंजरे में रहते।

हिरण, हाथी, नीलगाय,  
सब खाते चारा घास।  
गीदड़, बाघ, शेर और चीता,  
सारे खाते मांस।

एक बात मैं तुम्हें बताऊँ,  
सुन लो बच्चो बात।  
जंगली जानवर कोई हो,  
कभी नहीं लगाना हाथ।

कविता  
प्राथमिक अध्यापिका -  
राजकीय प्राथमिक विद्यालय-  
सराय अलावर्दी, गुरुग्राम हरियाणा

## बरगद का पेड़

किसी गाँव में बरगद का एक पेड़ बहुत वर्षों से  
खड़ा था। गाँव के सभी लोग उसकी छाया में बैठते  
थे। गाँव की महिलाएँ त्योहारों पर उस वृक्ष की पूजा  
किया करती थीं। समय बीतता गया और कई वर्षों बाद वृक्ष  
सूखने लगा। उसकी शाखाएँ टूट कर गिरने लगी और  
उसकी जड़ें कमजोर होने लगी थीं। गाँव वालों ने सोचा  
कि अब इस पेड़ को काट दिया जाए और इसकी लकड़ियों  
से गृहविहीन लोगों के लिए झोपड़ियों का निर्माण किया जाए।



गाँव वालों को आरी, कुल्हाड़ी लाते देख, बरगद के पास खड़ा एक वृक्ष बोला- 'दादा, आपको  
इन लोगों की प्रवृत्ति पर जरा भी क्रोध नहीं आता, ये कैसे स्वार्थी लोग हैं, जब इन्हें आपकी  
आवश्यकता थी तब ये आपकी पूजा किया करते थे, लेकिन आज आपको टूटते हुए देख कर  
काटने चले हैं। बूढ़े बरगद ने जबाब दिया- नहीं बेटे! मैं तो यह सोचकर बहुत प्रसन्न हूँ कि  
मरने के बाद भी मैं आज किसी के काम आ सकूँगा।'

शिक्षा- परोपकारी व्यक्ति सदा दूसरों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं तथा उनकी खुशी  
और उनके सुख में अपना सुख समझते हैं।

जयभगवान

सेवानिवृत्त अध्यापक

वार्ड-7, थाना कलाँ गाँव रोड़, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा

## छिपकली के पैर और

### 'वेंडर वाल फ़ोर्स ऑफ अट्रैक्शन'

'वेंडर वाल फ़ोर्स ऑफ अट्रैक्शन' की खोज वैज्ञानिक  
सर वेंडर जी ने ही की थी। दरअसल किसी अणु में  
इलेक्ट्रॉन नाभिक के चारों तरफ चक्करधिनी की  
तरह चक्कर काटते रहते हैं, पर कभी-कभी ज्यादा सारे  
इलेक्ट्रॉन एक तरफ हो जाते हैं, जिससे अणु में भी दो पोल बन  
जाते हैं। एक तरफ हल्का घनात्मक तो दूसरी तरफ हल्का ऋणात्मक। ऐसा ही पड़ोसी वाले  
अणु में भी होता है। वहाँ भी दो पोल बन जाते हैं, जिससे इन पड़ोसी अणुओं में एक आकर्षण  
बल उत्पन्न होता है, जिसे 'वेंडर वाल फ़ोर्स ऑफ अट्रैक्शन' कहा जाता है।



छिपकली की चाल में भी विज्ञान है। छिपकली के पैर पर बहुत सारे पर बहुत ही पतले  
बाल होते हैं। ये बाल हमारे बाल की मोटाई का एक बटा दसवाँ हिस्सा महीन होते हैं। एक  
मिलीमीटर स्क्वायर में 5000 बाल जैसी संरचना होती है। इन्हें setae कहा जाता है। ये  
बाल जैसी संरचना आगे और बारीक सैकड़ों बालों में बँट जाती है। ये सतह के इतने नज़दीक  
आ जाती हैं कि इनमें और सतह में भी वेंडर आकर्षण-बल उत्पन्न हो जाता है। इसलिये  
छिपकली चिकने काँच पर भी आसानी से चल लेती है, जहाँ बहुत ही कम घर्षण बल होता  
है। इसी कारण वह छत पर भी चल लेती है। कोई दाब नहीं कोई चिपचिपा पदार्थ नहीं। है तो  
बस 'वेंडर आकर्षण बल'।

सुनील अरोड़ा





# खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय विज्ञान

अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो, प्रस्तुत हैं कुछ और नई विज्ञान गतिविधियाँ।



## 1. सलाद है पोषण का स्रोत-

पोषण माह की गतिविधियों के चलते विद्यार्थियों को भोजन में सलाद के महत्व बारे यह बताया जाता है कि सलाद रूखांश का बेहतरीन स्रोत है। सलाद में शामिल वनस्पति पदार्थों जैसे खीरा, ककड़ी, टमाटर, प्याज, ब्रोकली, चुकंदर, हरा प्याज, मूली, गाजर, बीन्स, मशरूम, अंकुरित अनाज आदि से हमें विटामिन, खनिज लवण व कम कैलोरी की ऊर्जा के स्रोत प्राप्त होते हैं। सलाद भोजन के स्वाद को कई गुना बढ़ा देता है। पोषण माह गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों



के बीच सलाद सज्जा प्रतियोगिता रखी गई। इस प्रतियोगिता के सलादों को मिड-डे मील में विद्यार्थियों को परोसा गया। उन्हें बताया गया कि सलाद खाने से भोजन पकाने के दौरान नष्ट हुए पोषक तत्व भी मिल जाते हैं। सलाद को भोजन से एक दो घंटे पूर्व खाने का भी विधान है। पाश्चात्य खानों में सलाद को प्रमुखता दी जाती है।

## 2. पेड़ की वृद्धि का रिकॉर्ड रखना-

लंबी अवधि की गतिविधियों के अंतर्गत विद्यार्थी अपने विद्यालय, आसपास या घर में लगे हुए पेड़ की वृद्धि का रिकॉर्ड रख सकता है। इस गतिविधि को करने के लिए जमीन से एक निश्चित ऊँचाई पर पेड़ के तने पर एक स्थायी निशान लगाया जाता है। उसी निशान वाले स्थान पर फीते से पेड़ की परिधि व जमीन से उस बिंदु की ऊँचाई मापी जाती है। प्रत्येक तीन माह के बाद यह गतिविधि दोहराई जाती है। प्रेक्षणों को एक सारणी में



लिखा जाता है। इस दौरान हम एक फिक्स बिंदु पर पेड़ की लंबाई व पेड़ की परिधि के माप का हिसाब लगा सकते हैं, जिसमें हर तीन माह में उस निश्चित बिंदु पर पेड़ के घेरे व जमीन से उसकी ऊपर बढ़ती ऊँचाई का अनुपात भी ज्ञात कर लेते हैं। विद्यालय में यह गतिविधि प्रारंभ की गयी है, जिसमें विद्यार्थियों को शोधकर्ताओं द्वारा किसी शोध के दौरान किये जाने वाले प्रेक्षणों एवं गणनाओं की विधि का पता लगेगा। इस गतिविधि के अभ्यास का उन्हें भविष्य में लाभ होगा।

## 3. विद्यालय प्रांगण से विभिन्न नमूने एकत्रित करके सीखना-

विज्ञान पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियों में कक्षा 7 के विद्यार्थियों ने मृदा पाठ के अंतर्गत मृदा बनने की प्रक्रिया में सहायक पदार्थों को एकत्र किया। उन्होंने विद्यालय प्रांगण व खेल के मैदान से सूखे पत्ते, घास, तिनके, पशु अपशिष्ट, पौधों के फूल फल अवशेष व बालू सहित अन्य पदार्थ एकत्र किए। इन पदार्थों को क्रमवार लगाकर वनस्पति पदार्थों के अपघटन से ह्यूमस व उससे मिट्टी बनने की प्रक्रिया का अध्ययन किया। ह्यूमस के साथ बालू के कण मिला मिट्टी के बनने की प्रायोगिक पुष्टि की। इस दौरान उन्हें इस प्रक्रिया में केंचुए के योगदान का भी पता लगा। उन्होंने केंचुओं के बिल मुख्यों व उनके पास पड़ी मिट्टी की गोलियों का भी अध्ययन किया।





#### 4. गुब्बारा करे भयानक आवाज-

गुब्बारे में एक रुपये का सिक्का डालकर घुमाने से ध्वनि उत्पन्न नहीं होती, क्योंकि उसका आकार वृत्ताकार होता है। लेकिन यदि हम उसकी जगह एक नटबोल्ड का नट डालते हैं, जिसकी किनारी षटकोणीय होती है, उसको घुमाने से आवाज आती है। घुमाने की गति जितनी तेज करते हैं, ध्वनि भी उतनी ही तेज हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है कि घूमते हुए हेक्सा नट की किनारी का प्रत्येक भाग गुब्बारे की दीवार के साथ टकराता है, जिससे कंपन उत्पन्न होता है। उससे ध्वनि उत्पन्न होती है, जबकि वृत्ताकार सिक्का अपनी एक समान किनारी पर चलता हुआ गुब्बारे से टकराता नहीं है, निरन्तर संपर्क में रहता है। इसलिए अधिक कंपन उत्पन्न नहीं होता। हेक्सा नट वाली स्थिति में



ऐसा लगता है कि गुब्बारा खूब शोर कर रहा है।

#### 5. रासायनिक परिवर्तन होते देखना-

भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन पाठ के दौरान विद्यार्थियों को भौतिक परिवर्तन की तो बहुत सी गतिविधियाँ कराई गईं, जबकि रासायनिक परिवर्तन के मात्र उदाहरण दिए गये। विद्यार्थी रासायनिक परिवर्तन होते हुए भी देखना चाहते थे। उन्हें दूध का दही बनना, कागज का जलना व लोहे पर जंग लगना दिखाया गया, परन्तु वे और भी कुछ देखना चाहते थे। ऐसी स्थिति में कॉपर सल्फेट विलयन में रेगमार से साफ की हुई लोहे की कील को धागे से बाँध कर लटकाया गया तो लोहे की कील पर कॉपर विस्थापित हो



गया। इसे विस्थापन अभिक्रिया कहते हैं, जिसमें लोहे की कील ताम्बाई रंग की हो गई। अब विद्यार्थियों की समझ में आ गया कि ऐसा परिवर्तन जिसमें नया पदार्थ बनता हो, उसे रासायनिक परिवर्तन कहते हैं।

#### 6. दीवारें सिखायें कितना ज्ञान?

विद्यालय की विभिन्न दीवारों पर विज्ञान के पाठों में से बहुत से डायग्राम बनवाए गए हैं। इन दीवारों पर बने चित्रों का लाभ यह है कि विद्यार्थी आते-जाते उनको देखते हैं जिससे उन्हें संबंधित ज्ञान प्राप्त होता रहता है। सर्वप्रथम विद्यार्थियों को इनके अवलोकन की आदत डालनी पड़ती है। इसके लिए ही यह गतिविधि करवाई गई थी। बच्चों को



पेंसिल लेकर चित्र के सामने खड़े होकर कॉपी पर चित्र बनाने के लिए कहा गया। अब ऐसा करने से उनको उस दीवार पर बने डायग्राम को बार-बार देखने की आदत बन चुकी है।

आदरणीय अध्यापक व प्यारे विद्यार्थियों, फिर मिलते हैं अगली कड़ी में नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक सह विज्ञान संचारक,  
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला  
खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा





# बेहद मधुर है पहाड़ी मैना का स्वर



**मै**ना एक सुंदर पक्षी है जिसे हम अपने घरों के आसपास फुदकता हुआ देख सकते हैं। पार्कों अथवा उद्यानों में भी मैना छोटे-छोटे झुंडों में मनुष्यों के आसपास घास में से कीड़े-मकोड़े अथवा वनस्पतियों के बीज आदि चुगती रहती हैं, लेकिन जैसे ही कोई मनुष्य उनके पास जाने का प्रयास करता है तो वे फ़ौरन उड़ जाती हैं और थोड़ी दूरी पर वापस ज़मीन पर उतरकर अपना काम शुरू कर देती हैं। बच्चों को मैना के पीछे दौड़ना बड़ा अच्छा लगता है। मैना को विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग नामों से जाना जाता है लेकिन हमारे देश के अधिकांश भागों में इसे मैना के रूप में ही पहचाना जाता है। संस्कृत में मैना को सारिका अथवा शारक कहते हैं। पंजाबी में मैना को गुटार अथवा लालड़ी कहा जाता है। हरियाणा में इस सुंदर पक्षी को काब्बर के नाम से जाना जाता है।

मैना की कई प्रजातियाँ मिलती हैं। हमारे घरों के आसपास बाग-बगीचों अथवा उद्यानों में पाई जाने वाली मैना को अंग्रेज़ी में कॉमन मैना (Common Myna) कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम है अक्रिडोथेरिस ट्रिस्टिस (Acridotheres tristis)। मैना मूल रूप से दक्षिणी एशिया का पक्षी है जो भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, दक्षिणी चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, इंडोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड व श्रीलंका आदि देशों में पाया जाता है, लेकिन आजकल दुनिया के कई अन्य भागों में भी मैना को देखा जा सकता है। इसका कारण है इसे खेती के काम के लिए पालना। क्योंकि मैना फ़सलों को हानि पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़ों को खा जाती है

इसलिए खेतों में फ़सलों को कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिए मैना को पाला जाता है। कीड़े-मकोड़ों और केंचुओं के अतिरिक्त मैना मरी हुई छिपकलियों और पक्षियों को भी खा जाती है।

जिस समय किसान खेतों में हल चलाते हैं, दूसरे कई पक्षियों के साथ-साथ मैना भी हल के पीछे-पीछे चलती हैं और मिट्टी में से बाहर निकलने वाले कीड़े-मकोड़ों को मजे से खाती हैं। मैना शहरों व गाँवों की रिहायशी बिस्तियों के आसपास छोटे-बड़े समूहों में देखी जा सकती है। मैना के मनुष्य के आसपास रहने का भी एक प्रमुख कारण है और वह है भोजन की प्राप्ति। अपने प्राकृतिक भोजन के अतिरिक्त मैना मनुष्य द्वारा छोड़े गए भोजन द्वारा भी आसानी से अपना पेट भर लेती हैं। इसीलिए भोजन की तलाश में मैना घरों के खुले आँगनों तक भी पहुँच जाती हैं। मैना एक निडर पक्षी है जो अपने बचाव के लिए अपने से बड़े पक्षियों पर भी हमला कर देती है। मैना एक सुंदर व आकर्षक पक्षी है। इसकी आवाज़ भी बहुत मधुर होती है।

मैना एक स्थान पर टिककर बैठने के बजाय इधर-उधर घूमते रहने वाला पक्षी है। पूरी दुनिया में मैना की बीस के लगभग प्रजातियाँ मिलती हैं। मैना का रंग काला व भूरा होता है। इसकी गर्दन का रंग काला व चोंच का रंग पीला होता है। इसका पेट व पूँछ सफ़ेद व हलके भूरे रंग की होती है। मैना की चोंच के रंग की तरह ही इसकी आँखों के आसपास का रंग भी पीला ही होता है। यह पीला रंग उसकी चोंच से शुरू होकर उसकी आँखों के पीछे तक देखा जा सकता है। मैना की लंबाई बीस

से पच्चीस सेंटीमीटर तक होती है। मैना के पैर बहुत मज़बूत होते हैं। कई पक्षियों में नर और मादा पक्षी में बहुत अंतर होता है, लेकिन मैना में नर और मादा में विशेष अंतर नहीं होता।

मैना अपना घोंसला घरों की दीवारों में बने छेदों, घरों की छतों, कुओं के सुराखों व पेड़ों आदि पर बनाती है। कभी-कभी मैना लोगों के घरों के अंदर भी अपना घोंसला बना लेती हैं। लोग इनके द्वारा लाई गई सामग्री को उठाकर बाहर फेंक देते हैं तो ये पुनः अपना प्रयास प्रारंभ कर देती हैं। मैना अपना घोंसला बनाने के लिए घास-फूस, तिनके व लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े, रुई व कागज़ के टुकड़े, गोबर अथवा उपलों के सूखे टुकड़े, चिथड़े व साँप की केंचुली आदि चीज़ें प्रयोग में लाती है। मादा मैना प्रायः जून, जुलाई व अगस्त के महीनों में चार-पाँच अंडे देती है जो हलके नीले रंग के होते हैं। अंडों में से लगभग दो सप्ताह बाद चूजे निकलते हैं।

जैसा कि सुना जाता है कि मैना बहुत मधुर स्वर में गाती है और दूसरे पक्षियों की आवाज़ की नक़ल करने के साथ-साथ मनुष्य की आवाज़ की नक़ल भी कर लेती है, लेकिन हमारे घरों व बाग-बगीचों में रहने वाली कॉमन मैना ऐसा नहीं कर पाती। ऐसा करने वाली मैना देश के विभिन्न हिस्सों में पहाड़ों के जंगलों में पाई जाती है। इसे हिल मैना अथवा पहाड़ी मैना कहते हैं। पहाड़ी मैना हमारी घरेलू मैना की तरह फुदक-फुदककर नहीं चल सकती। पहाड़ी मैना की लंबाई तीस सेंटीमीटर तक होती है। इसकी चोंच और पैर नारंगी-पीले रंग के होते हैं। पहाड़ी मैना के शरीर का ऊपरी भाग हलकी हरी अभा लिए हुए चमकदार काले रंग का होता है और शरीर पर पीले-नारंगी रंग के धब्बे होते हैं। पहाड़ी मैना जब बैठी होती है तो काले रंग की दिखलाई पड़ती है लेकिन उड़ते समय इसके पंख सफ़ेद रंग के दिखलाई पड़ते हैं।

पहाड़ी मैना की भी कई प्रजातियाँ मिलती हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर के जंगलों में पाई जाने वाली पहाड़ी मैना को छत्तीसगढ़ का राज्य पक्षी घोषित किया गया है। यह पहाड़ी मैना मुख्य रूप से राज्य के दंतेवाड़ा, बीजापुर, नारायणपुर, कोंडागाँव व जगदलपुर के जंगलों में मिलती है। छत्तीसगढ़ के इस राज्य पक्षी पहाड़ी मैना का वैज्ञानिक नाम है ग्रेकुला रिलिज़िओसा (Gracula religiosa)। इसके नाम में आए रिलिज़िओसा शब्द से पता चलता है कि हमारे देश में मैना को एक पवित्र पक्षी माना जाता है अतः इसे देखने पर प्रसन्नता होती है। पहाड़ी मैना के बहुत अच्छा गाने के गुण के कारण ही लोग इन्हें पिंजरों में बंद करके रखना चाहते हैं जो उचित नहीं। हमें पशु-पक्षियों को कैद रखने का कोई अधिकार नहीं। वे जंगलों की शोभा हैं और अपने प्राकृतिक आवास में ही अच्छे लगते हैं।

सीताराम गुप्ता  
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा  
दिल्ली - 110 034





# महिलाओं के अधिकारों का हनन क्यों ?



**1975** में जब यूएनओ ने आधिकारिक तौर पर 8 मार्च को महिला दिवस मनाने का फैसला लिया तब उसकी शुरुआत 'अतीत का जश्न मनाओ, भविष्य की योजना बनाओ' थीम से हुई। वैसे देखा जाये तो महिलाओं ने 1908 में अमेरिका से अपनी आवाज़ बुलंद करनी शुरू कर दी थी, जब उन्होंने अपना मताधिकार का हक माँगा था। भारत में इस तरह की इतिहास में कोई खास घटना देखने को नहीं मिलती, लेकिन इसकी शुरुआत स्वतंत्रता सेनानी और 'भारत-कोकिला' कही जाने वाली सरोजिनी नायडू के जन्म-दिन 13 फरवरी को 'राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में इस दिन को मनाये जाने से जोड़ कर देखा जाता है। वैसे तो हमारे सामने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, ज्योतिबा, सावित्री बाई फुले, मदन टैरेसा, इन्दिरा गांधी से लेकर कल्पना चावला, लता मंगेशकर तक कितनी ही लम्बी सूची है जिनका योगदान समाज के लिए अतुल्य है। जहाँ से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि महिला किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। लेकिन क्या आज महिलाओं को वह सम्मान मिल रहा है जिसकी वे हकदार हैं? 22 जनवरी 2015 से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के नारे से महिला सशक्तीकरण की तरफ सराहनीय कदम बढ़ाया गया है, जिसका असर समाज में देखने को मिल रहा है। लेकिन आज भी महिलाओं की उपेक्षा तो हो ही रही है, इसको हमें स्वीकारना होगा और यह तब तक जारी रहेगी जब तक हमारी सोच नहीं बदलेगी। घर में जब लड़का जन्म लेता है तो ढोल नगाड़े बजाते हैं तो लड़की के जन्म पर क्यों नहीं? यह सोच बदल सकती है शिक्षा के माध्यम से। यदि समाज शिक्षित व जागरूक होगा तो कभी-भी निर्भया जैसी घटना नहीं घटेगी।

भारत ऋषि-मुनियों का देश जाना जाता है, जहाँ पर कहा गया है-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।  
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥'  
अर्थात्- जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती, उनका सम्मान नहीं होता, वहाँ किए गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

आइये संकल्प लें- यदि वास्तव में महिलाओं का सशक्तीकरण चाहते हैं तो उन्हें वह सम्मान दें, जिसकी वे हकदार हैं और इसकी शुरुआत हमें स्वयं से करनी होगी। इस तरह से समाज की सोच अपने-आप बदल जायेगी। विश्व के किसी भी देश को देखिये, जहाँ पर महिलाओं को पुरुषों के साथ चलने का मौका मिलता है तो उन्होंने सिद्ध कर दिया वे पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है और वह राष्ट्र समृद्धि की ओर अग्रसर है। रुढ़िवादिता को छोड़ें, जिसमें महिला को केवल गृहिणी के रूप में देखा जाता था, उपेक्षा होती थी एवं समाज में 'पुरुष' को प्रधान के रूप में देखा जाता था।

आज यह भी संकल्प लें यदि हम भविष्य में सशक्त नारी देखना चाहते हैं तो लिंग-भेद भाव खत्म करें एवं बालिका शिक्षा पर ध्यान दें, क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो महिलाओं को उनके अधिकारों को दिलाने में सहायक है और इस तरह से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। याद रखिये-

'अपमान मत करना नारियों का,  
इनके बल पर जग चलता है।  
पुरुष इन्हीं की कोख से जनता है,  
और इन्हीं की गोद में पलता है।'

जयवीर सिंह  
मुख्याध्यापक मौलिक  
रावमावि बिघाना जीन्द, हरियाणा

## 2023

### मार्च माह

#### के त्यौहार व विशेष दिवस

3 मार्च-	विश्व वन्यजीव दिवस
8 मार्च-	होली
	अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस
15 मार्च-	विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस
16 मार्च-	राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस
20 मार्च-	विश्व गौरेया दिवस
21 मार्च-	विश्व वानिकी दिवस
22 मार्च-	विश्व जल दिवस
23 मार्च-	भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव शहीदी दिवस
27 मार्च-	छठ पूजा



'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।  
मेल भेजने का पता-  
shikhsaarthi@gmail.com





# E-Waste – A Challenge for Modern Generation



**Rajesh**



Electronic waste, popularly known as 'e-waste' can be defined as electronic equipment/products connected with power plugs, and batteries that

have become outdated due to advancements in technology, changes in fashion, style, and status nearing the end of their useful life.

It is one of the rapidly growing environmental problems of the world. In India, electronic waste management assumes greater significance not only due to the generation of our own waste but also the dumping of e-waste particularly computer waste from developed

countries. With extensive use computers and electronic equipment and people dumping old electronic goods for new ones, the amount of E-Waste generated has been steadily increasing.

If it is not handled properly, it can cause serious health hazards. According to National Centre for Biotechnology Information, these risks include silicosis, cuts from Cathode Ray Tube (CRT) glass, inhalation of mercury,







tin and lead compounds from circuit boards, acid contact with eyes and skin, and circulatory failure.

It has woven a large informal sector in Indian cities that is involved in segregation and dismantling electronic items. Lamington road or Crawford market in Mumbai, SP market in Bengaluru and Nehru Place, Seelampur or Seemapuri in Delhi, all are hubs of e-waste disposal sites. Mumbai tops the list of e-waste generating cities, followed by Delhi and Bengaluru.

In 2012, Government passed the E-waste Management and Handling Rules Law, which states that agencies must have licenses and comply with pollution standards, and labour laws. A fine of upto 1 lakh and jail of upto 7 years would be announced on the violators. However to ensure effective implementation of these Rules and to define the role of the producers, the Government of India overriding the E-waste (Management and Handling) Rules, 2011 notified the New E-Waste

(Management) Rules, 2016 vide G.S.R. 338(E) dated 23.03.2016 which came to force on October 10, 2016.

In addition to the above Laws, consumers must also take responsibility for their own old electronic goods. They must ensure that their e-waste is deposited at authorised collection centres, or recyclers certified by Central Pollution Control Board and Union Ministry of Environment and Forests.

#### What can we do about e-waste

- » The best thing you can do is to resist buying a new device until you really need it.
- » Try to get your old product repaired if possible and if it can't be fixed, resell or recycle it responsibly.
- » Before you recycle your device, seal up any broken parts in separate containers so that hazardous chemicals don't leak. Wear latex gloves and a mask if you're handling something that's broken.
- » Find a responsible recycler. Recyclers with the E-Steward label on

their websites have been certified to meet the cleanest and most responsible standards for e-waste recycling. E-Steward recyclers also clear your data in their recycling process.

- » E-waste management in India is a great challenge for governments. It is becoming a huge public health issue and is exponentially increasing by the day.
- » It has to be collected separately, treated effectively, and disposed off.
- » It is also a diversion from conventional landfills and open burning.
- » It is essential to integrate an informal sector with the formal sector.
- » The people in developing countries like India need to spreading awareness and establish the mechanisms for handling and treating e-waste in a safe and sustainable manner.

**Lecturer in Biology**  
**GGSSS Bachhod**  
**Block-Ateli, Distt. Mahendergarh**





# Who will win the battle of Life?



## Dr. Himanshu Garg



Life is a continuous battle and everyone wants to win that battle. In the battle of life, winning and losing are secondary; our zest to fight it, learning caliber, stable behavior and survival skills count. There was an incident which will help us to know the secret to win the battle of life.

Once an international painting competition was organized and the prize money for the winner was a big amount. So artists from all over the world were eager to participate in that competition. Thousands of great artists participated in it and sent their best

creations to win that competition. All of the creations were fabulous so it was hard to select the best creation for the jury members. But by analyzing, they selected 10 best creations of the world. Now the competition became more tough. It was a cut-throat competition in those 10 masterpieces. All the paintings were splendid. One painting was showing the night scene. The stars were twinkling. The moon was shining and shown in the lake, the scene was very calm and fresh like an ocean of peace. The other one showed a snowfall scene spreading peace and happiness everywhere. All the paintings showed emotions at their peak. As this was a grand competition, all the media members, artists and viewers were eagerly waiting for the results and continuously watching the big TV screen. Suddenly the Big TV screen showed a painting that

won the competition. But all the audience present there, were really shocked to see that painting. Some of the persons thought that painting appeared on the screen by mistake and media members rushed to the jury members to know the actual results. Then one of the jury members assured them that this is the painting that won this competition. They want to know the specialty in that painting. All were curious to know the reason. That painting was showing a dark stormy night scene and there was dust and darkness everywhere. Then one of the jury members described that you all only saw the dark night and storm in that painting. This painting also has a hut which is clearly visible in the moonlight. That hut has a window and there is a man standing in that window. That man has wonderful expressions of hope and positivity on his face. It depicts that everything will be alright soon.

If we have calmness in the outer environment, we can maintain positivity, peace and happiness internally. But



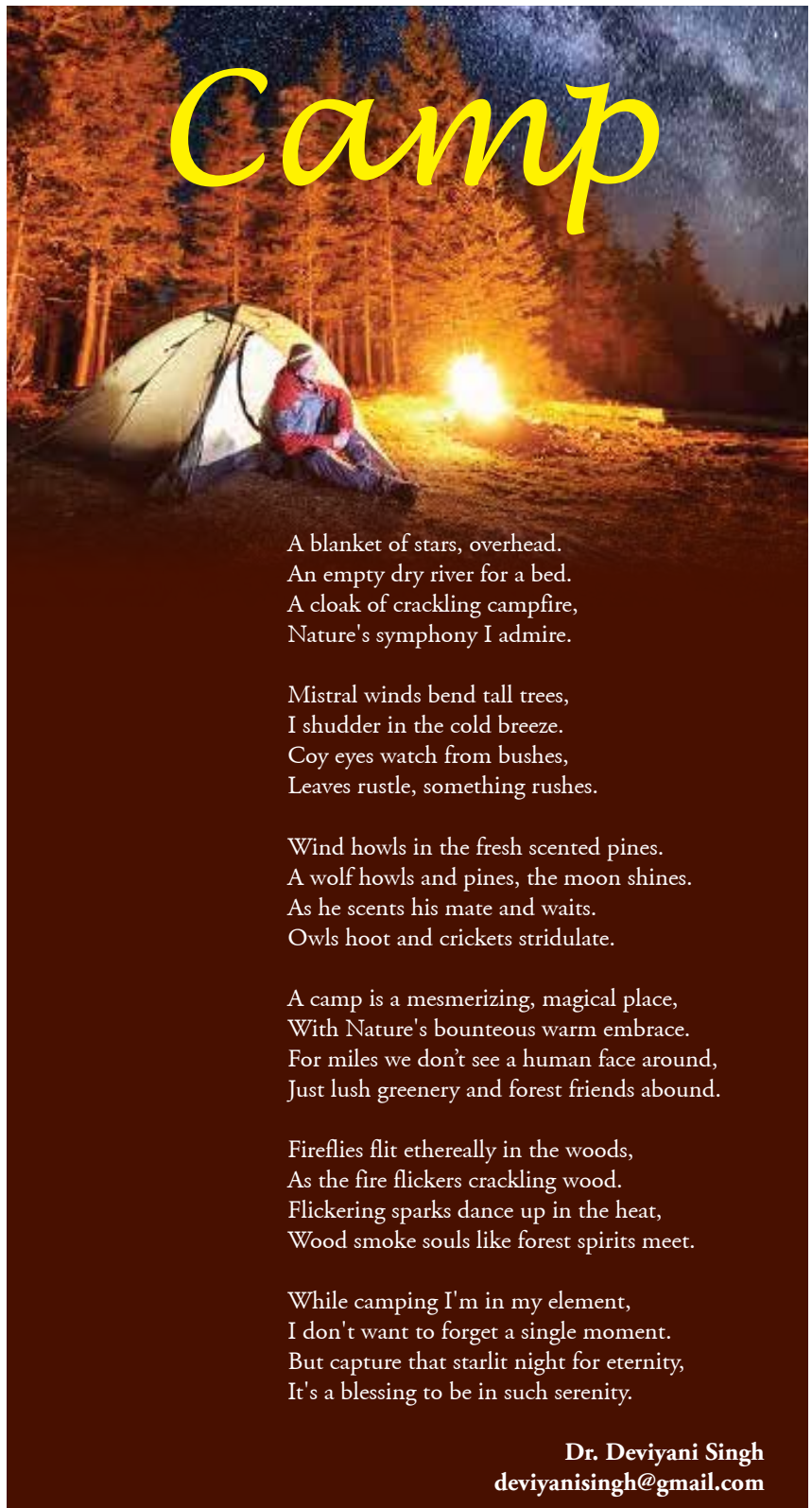


even the outer peaceful environment can't settle our inner imbalance. If we sume an adverse situation, when we are surrounded with problems, we can't enjoy outer happiness. We can't even see that wonderful joy of nature.

All the other paintings were showing peace and happiness everywhere, only this exclusive painting was able to maintain that positivity in that adverse situation too. That's why the painting won this grand competition. When God came to this earth as a human being, His life was not so easy. He faced a lot of hurdles and challenges at every phase of His life. We worship God only because He accepted all the situations and maintained stable behavior in all panic situations too.

The above mentioned incident gives a deep message to all of us that maintaining peace, happiness and positivity in a normal situation, is not a big deal. We must maintain the same behavior in adverse situations too to win the battle of life.

**Asstt. Professor(Comp. Sci.)  
Govt. college for Women, Jind  
himanshujind@yahoo.com**



# Camp

A blanket of stars, overhead.  
An empty dry river for a bed.  
A cloak of crackling campfire,  
Nature's symphony I admire.

Mistral winds bend tall trees,  
I shudder in the cold breeze.  
Coy eyes watch from bushes,  
Leaves rustle, something rushes.

Wind howls in the fresh scented pines.  
A wolf howls and pines, the moon shines.  
As he scents his mate and waits.  
Owls hoot and crickets stridulate.

A camp is a mesmerizing, magical place,  
With Nature's bounteous warm embrace.  
For miles we don't see a human face around,  
Just lush greenery and forest friends abound.

Fireflies flit ethereally in the woods,  
As the fire flickers crackling wood.  
Flickering sparks dance up in the heat,  
Wood smoke souls like forest spirits meet.

While camping I'm in my element,  
I don't want to forget a single moment.  
But capture that starlit night for eternity,  
It's a blessing to be in such serenity.

**Dr. Deviyani Singh  
deviyanisingh@gmail.com**





# CONSTITUTIONAL RIGHTS FOR STUDENTS IN INDIA



All the legal rights available to a citizen of India are available to students in general which makes it challenging for a student in India to exercise their rights in a proper way. According to Prasouk Jain and Apurv Chandola, the word student has not yet been statutorily defined and there is also a lack of any codified law for Student rights in India which makes it difficult for students today to exert their rights in a systematic manner. Here from fundamental legal rights, we can understand the rights of students in India as under:

## 1. Right to freedom of speech and expressions: -

In a petition filed by a student of law, the Supreme Court laid down the importance of freedom of speech and expression both from the point of view of the liberty of the individual and from point of view of the democratic form of our government. The Supreme Court held that freedom of speech and expression of opinion is of paramount importance under a democratic constitution which envisages changes in the composition of legislatures and governments and must be preserved.

## 2. Right to information: -

While permitting the examinees to inspect their answer books, Supreme Court held that the right to informa-

tion is a facet of the freedom of “speech and expression” as contained in Article 19 (1) (a) of the Constitution of India and such a right is subject to reasonable restriction in the interest and security of the State and to exemptions and exceptions.

## 3. Right to equality:-

While laying down the principles to be followed by educational institutions during admissions, the Supreme Court laid down that if there is a violation of the right to equality and equal treatment to the competing candidates, it would be completely just and fair to provide exceptional relief to the candidate under such circumstances alone.





#### 4. Right to education: -

The act also known as the Right of Children to Free and Compulsory Education Act was enacted in 2009 wherein, all children between the age of 6-14 years have the right to elementary education

#### 5. Right to Life under Article 21 of the Constitution of India: -

A Division bench of the Delhi High Court while striking down a rule for disciplinary action under the Delhi School Education Rules, 1973 held that children should not be subjected to corporal punishment in schools and they should receive education in an environment of freedom and dignity, free from fear. It's importance: - The right was evoked with Parents Forum for Meaningful Education & Anr vs Union of India & Anr. AIR 2001 Del 212. The Parents Forum filed a PIL to stop punishment to students in schools. After this, the court gave the verdict with direction to education institutions for dealing with students who neglect schoolwork but should refrain from

any kind of corporal punishment. After the verdict, schools have to follow the guidelines below when dealing with students -

- » Detain students during lunch break hours if they neglect class work
- » No punishment or detention after school hours if they neglect class work.
- » No punishment/ expulsion/ fine/ detention to students under the age of 14.
- » Fine can be imposed only on the students above 14 years of age in case of late attendance, being absent from school -without application, skipping/ bunking classes, cause damage to school property or if there is any delay in payment of school fees and dues.
- » Corporal Punishment (not harsh) could be given only if the student is impolite or rude towards teachers, causes physical violence in school or any other serious misbehavior towards fellow students.
- » No Corporal Punishment to stu-

dents who are ill.

- » Corporal Punishment should not lead to physical injury to the student.
- » If any student is expelled from one school, he should not be denied admission to any other school.
- » No student can be expelled or rusticated without giving a chance to parents/guardians for 'show-cause' notice.

Laws focusing on the needs of students is a much-needed exercise to be conducted by the Government to avoid biases in academics, sports, and other spheres. Codified laws could further help protect them from the arbitrary action of institutions, individuals, or the state. While the same is under process, awareness is the key for a student to protect his or her rights and I hope that this info will help to give an insight into some of their basic rights”.

**Anju Soni**  
Legal Assistant  
SCERT Haryana Gurugram



# Salt Run

They say, for everything salt is the cure,  
I could have cried me a river, maybe more.  
So I took my tears to the salty sea shore,  
My badly torn heart on my sleeve I wore.

My tears were but drops in the vast ocean around.  
But the joys to be found in its depths were unbound.  
My grief was drowned in the roaring tide,  
Where secret treasures of eons ago hide.

I faced the cool sea breeze with all my fears,  
Into the salty air I tossed all my cares.  
The salt like a balm settled on my tawny arms,  
My heart suddenly felt free, calm and disarmed.

The sea allowed my heart to sink as far as it could,  
And then lightly bobbed it up like a piece of wood.  
It allowed me to surf my sorrows on its troughs,  
And waved to me, that better days were to follow.

So I cried and cried till my tears ran dry,  
The salty sea water stung my sore, red eyes.  
I blinked and saw a stunning sunset on the horizon,  
The beauty of creation not to admire would be a sin.

I let the salt wash away every last trace,  
Deep furrows of grief and sorrow off my face.  
I cried till my salt tears couldn't flow anymore,  
The ocean swallowed them till there were no more.

Then on expansive beaches barefoot, I ran and ran,  
Salty wind in my hair across golden sandy land.  
Till my sweat and tears mingled with the sea,  
The mineral salts, caressed and cured me.

The grainy comfort of sand between my toes,  
Gently massaging out my worries and woes.  
I ran till my heart became one with the salty sea,  
As I found a hidden sweet retreat within me.

**Dr. Deviyani Singh**  
[devyanisingh@gmail.com](mailto:devyanisingh@gmail.com)





# 50th State Level Science, Mathematics and Environment Exhibition Report 2022-23

## Rashtriya Bal Vaigyanik Pradarshani” (RBVP)



As we all know that with a view to encourage, popularize and inculcate scientific temper among the children of the country, NCERT organizes national level science exhibition every year where children showcase their talents in science and mathematics and their applications in different areas related with our everyday life. To reflect the essence of National Education Policy 2020, the Jawahar Lal Nehru National Science, Mathematics and Environment Exhibition has now been renamed as “Rashtriya Bal Vaigyanik Pradarshani” (RBVP).

### Objectives of the Exhibition

- » To provide a forum for children to pursue their natural curiosity and inventiveness to quench their thirst





- » for creativity;
- » To make children feel that science is all around us and we can gain knowledge as well as solve many problems also by relating the learning process to the physical and social environment;
- » To encourage children to visualise the future of the nation and help them become sensitive and responsible citizens;

- » To analyse how science has developed and is affected by many diverse individuals, cultures, societies and environment;
- » To apply mathematics and information technology to visualise and solve problems pertaining to everyday life etc.;
- » To create awareness about environmental issues and concerns and inspiring children to devise innovative

ideas towards their mitigation.

#### **Themes and Subthemes for 2022-23**

The main theme of the exhibition this year was – “Technology and Toys” and the subthemes were –

- » Advancement in Information & Communication Technology
- » Eco friendly Material
- » Health and Cleanliness
- » Transport and Innovation
- » Environmental Concerns
- » Historical Development with Current Innovation
- » Mathematics for us

#### **BLOCK/DISTRICT LEVEL EVENT**

Rashtriya Bal Vaigyanik Pradarshani was organized in all 22 districts of Haryana-Block Level Exhibition followed by District Level. The exhibition was organized by all 119 blocks of the state where the BEO was the chief guest for the day. The exhibition was organized at the District level under the supervision of the District Science Specialists and the District Education Officers honoured the winning students at the district level. The events at district level were also closely monitored by SCERT Officials. A total of around 4500 students participated at







these levels. The innovations of the participants in the Rashtriya Bal Vaigyanik Pradarshani at the block and district level impressed everyone. The students gave a new shape to their thinking by presenting the best.

#### STATE LEVEL EXHIBITION

The State Level Rashtriya Bal Vaigyanik Pradarshani was organized from February 09th 2023 to February 11th, 2023 at the campus of State Council of Educational Research and Training (SCERT) Gurugram, Haryana. The exhibition was inaugurated by the Chief Guest Sh. Mahabir Singh (HCS) Worthy Director of the council. The Chief Guest was welcomed by both Joint Directors Sh. Anil Sharma and Madam Sunita Panwar along with Deputy Director Sh. Sunil Bajaj, Science Wing Head Dr. Suman Sharma and all Senior Specialists of the council. The program started with lighting of lamp by the Chief Guest. The Director praised the participating students for their exhibits and wished them good luck for the judgement day. He while addressing the children said that through this exhibition an attempt is made to make the students feel that there is science and mathematics all around us. We can





<b>Sub Theme: Advancement Information &amp; Communication Technology</b>		
Position	Name of Student	Name of School
First	Sandeep	GSSS Bhondsi Gurugram
Second	Ashok	GSSS Matanhail Jhajjar
Third	Nisha	GGSSS Ballabhgarh, Faridabad
<b>Sub Theme: Eco friendly Material</b>		
First	Laxmi	GSSS Tehsil Camp Panipat
Second	Lokesh	GSSS Gharrot Palwal
Third	Pallavi	GGSSS Badshahpur Gurugram
<b>Sub Theme: Health and Cleanliness</b>		
First	Himanshi	GMSSSS Kanina, Mahendergarh
Second	Sakshi	GSSS Retoli Jind
Third	Rubi	GSSS Kalanaur Rohtak
<b>Sub Theme: Transport and Innovation</b>		
First	Bharat	GSSS Patli Dabar Sirsa
Second	Ravika	GSSS Leghan Bhiwani
Third	Richard	GMSSS Yamuna Nagar
<b>Sub Theme: Environmental Concerns</b>		
First	Monika	ShriRam Public School Kanhera, Charkhi Dadri
Second	Neha	GGSSS Kathura GSSS Dujana, Sonipat
Third	Naman	GSSS Dujana Jhajjar
<b>Sub Theme: Historical Development with Current Innovation</b>		
First	Arun Kumar	GSSS NIT-1 Tikona Park, Faridabad
Second	Sakshi	Shivam SSS Lohani, Bhiwani
Third	Abhijeet	GSSS Mohana Sonapat
<b>Sub Theme: Mathematics for us</b>		
First	Shubham	GMSSSS Sohna Gurugram
Second	Naveen	GSSS, Narwana Jind
Third	Priya	Shivam SSS Lohani Bhiwani

solve many problems by increasing our knowledge by connecting the learning process with the physical and social environment. The organization of these exhibitions envisages that children and

teachers would try to analyse all aspect of human endeavour with a view to identify where and how the new researches and developments in science and technology can bring and sustain

progress of society leading to improvement for the challenges of life.

This year around 650 participants from across the state became a part of this exhibition. All the District Winners and their guiding teachers from various sub-themes from all the districts across the state participated in the event. Registration of participating students was started at 9AM on 9th Feb by Satish Kumar and other registration team members. The Director personally visited all the exhibits models on the subjects of Environment, Mathematics and Science. There were many models here worthy of appreciating the skill of the little scientists.

Dr. Sanjay Kaushik and Dr. Jyoti Arora subject specialist from the Science wing conducted the open science Quiz for all participating students of exhibition. Aarju from GGSSS Rohtak got a gold medal, Ishika Aggarwal from GMSSS Yamuna Nagar got a silver medal and Mahi Bhardwaj a got bronze medal in this event.

One day seminar for teachers was conducted on 10th Feb. Topic of seminar was "Scientific Innovations for Sustainable Development." Fifteen teachers participated in this event. All participating teachers were awarded with certificates, trophies and cash prizes of Rs. 2000/-each.

The cultural event was organised in evening time from 5:30PM to 7:30PM. Students participated in it and enjoyed a lot. The students highlighted the culture of Haryana. Haryanvi folk dance was the centre of attraction.

Dr. Anshaj Singh, Director, Secondary Education, Haryana attended the closing ceremony of the exhibition as the chief guest on 11th Feb. 2023. Director SCERT Mahabir Singh welcomed Director Secondary Education Haryana and gave detailed information about the three days Exhibition to the Chief Guest.





Mahabir Singh while addressing the children said that they should not be disheartened that their model was not selected. The reaching of the model to the state level is also a great achievement. The forum was moderated by subject expert Tanu Bhardwaj.

Dr. Anshaj Singh, Director of Secondary Education, Haryana appreciated the model presented by the students during the observation in the exhibition and inspired the young scientist to make great inventions in the future.

Unveiling of souvenir 2022-23 was done by Worthy Director during the award ceremony to state level winner students. Souvenirs were distributed to all participating students and teachers in the event and given to all DSS for distribution of all senior secondary schools.

State level Science, Mathematics and Environment Exhibition (RBVP) Coordinator and Senior Subject Specialist Savita Ahlawat declared the result of the exhibition which is as follows –

Certificates, Medals, Trophies and cash prizes of First@5000/- Second@4000/- Third@3000/- were distributed by Chief Guest Dr. Anshaj Singh (IAS) with Director SCERT Mahabir Singh, Dr. Suman Sharma In charge Science Wing, all senior members of SCERT ,DEOs, DEEOs and DIET Principals were present on the occasion of this ceremony. Overall trophy of the event was given to District Gurugram.

The program ended with vote of thanks by Joint Director Mrs. Sunita Panwar, who thanked Worthy DSE and Director SCERT for their all time support .

**Savita Ahlawat**  
**State Coordinator – RBVP**  
**Science Wing**  
**SCERT Haryana Gurugram**





# Conversing with Colours



difficulty in distinguishing between so many shades of pink much to the chagrin of lady fashionistas, from magenta, fuchsia, coral to salmon etc.

Did you know that more men than women are color blind? Color vision deficiency, or CVD affects approximately 1 in 12 men (8%) and 1 in 200 women. What a pity it would be to see the world without these vivid colors?

Each color also has a frequency or range.

The lowest frequency to highest, are red, orange, yellow, green, blue, indigo, and violet. Because of the inverse relationship, they are reversed in order by wavelength. The color with the highest frequency is violet. Colors also seem to talk and interact with us and our moods with red being described as bold and loud and blue as cool and calm.

Let us then immerse ourselves in this wonderful world of colors and look forward to celebrating the festival of colors by spreading positive vibes all around. Wish you all a happy and safe Holi!

## Dr. Deviyani Singh



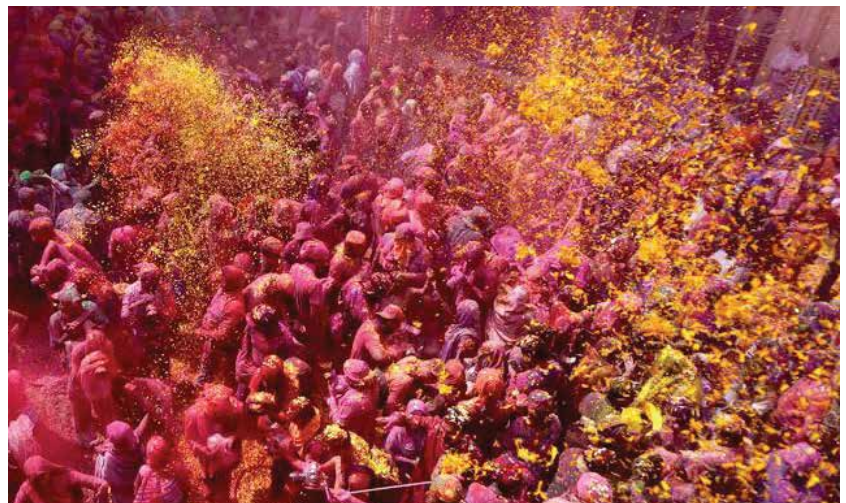
Ekadashi before Holi. The town folk play only with flowers and images of Radha Krishna are emersed in tons of marigold petals. What a wonderful way to celebrate the festival of colors.

Colors also have multiple hues and shades. Some men, notoriously have

[deviyanisingh@gmail.com](mailto:deviyanisingh@gmail.com)

With Holi just around the corner everyone has colors on their mind. It is the festival to celebrate the oncoming of Spring and the Earth too seems to laugh in colors with its myriad beautiful flowers. We have all sorts of herbal colors now. But did you know besides these we can source colors from nature around us. The tesu flower, also known as the Flame of the Forest (*Butea monosperma*) Palash or Dhak can be boiled to produce a fragrant orange yellowish color. The flowers can also be soaked overnight to get color.

The famous Phoolon ki Holi is played at Vrindavan that falls on the





**Commerce**

Commerce is an essential part of the business that covers the economical part of the social, legal, technological and political aspects. It involves the activities of exchange of goods, money and services between companies and persons. It has a few fields of specializations but very demanding and challenging. Commerce is a gateway for the finance and accounts world for all corporate sectors. The CA, CFA and CS are the professional job oriented courses after 12th (Commerce).

**B.Com**

The Bachelor of Commerce (B.Com) is a degree course done by a large number of students after their class 12th. The B. Com degree gives



B.Com

you complete overview of overall business scenario, this includes buying and

selling of goods, also helps in understanding the underlining principles of accounts and economics. The students can opt for this field if they wish to make their future in finance, accounts and management.

**Course Type:** Degree  
**Duration:** 3 Years  
**Salary:** around 1.5-2.5 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Accounting & finance  
**12th Stream:** Commerce [or] Science  
**CA (Chartered Accountant)**

Chartered Accountancy was established in 1854 in Britain. It is the core activity of the business. A CA is the member of ICAI (Indian Chartered Accountants Institute) and deals with the financial management and carries out financial audits. A CA works as a private advisor for an organization. After the completion of this course you can go for work like auditing, cost accounting, tax management, man-



agement accounting, consultancy and CA's can also work in an industry.

**Course Type:** Degree  
**Duration:** 5 Years  
**Salary:** around 3-6 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Business & finance  
**12th Stream:** Commerce [or] Science



**CS (Company Secretary)**

Company Secretary deals with the legal activities of any business. It is a corporate professional course. The role of a company secretary is to keep the records, advice, tax returns and evaluate the legal aspects of the organization. This course contains the three levels as foundation, executive and professional course. It is one of the eminent courses after 12th commerce. The students having art or science can pursue the CS course.

**Course Type:** Degree





(foundation/executive/professional)  
**Duration:** 3 Years (8 month/9 month/15 month+ internship)  
**Salary:** around 2-3 lakh per Annum (for fresher)  
**Career Interest:** Accounts and finance  
**12th Stream:** Commerce [or] Science

### Arts and Humanities

The section art and humanities carry a range of various courses. This field provides a lot of career oriented courses that a student can pursue with any stream in class 12th. This field provides interesting and unique career options to the students of their choice. This field overlaps with various other fields like computer, management and law. This field has good job and business oriented courses. Movie, media, animation, cultural art, choreography, painting, photography and cooking are some of the best options that a student can choose after class 12th.

### Law Courses

Law is the basic part of our constitution. It is the only degree course provided in India in legal education. It is one of the most popular courses among the large number of students. Law course provides complete information about our law and constitution. It cov-



ers the civil litigation, legal analysis and document drafting. After the completion of this course the candidate can go for private practice in court. You can be a part of juries and can play a role as the public prosecutor. After some experience one can also start his own consulting firm.

**Course Type:** Degree/Integrated degree  
**Duration:** 3 Years/5 Years  
**Salary:** around 2-4 lakh per

Annum (for fresher)  
**Career Interest:** Law and legal aspects  
**12th Stream:** Any stream  
**Animation and Multimedia**

Animation is one of the most popular courses for arts students. If you have creativity and skills then this field can provide your ample opportunities. Animation involves creation of objects with computer graphics whose movement or shapes changes continuously.



It works on the principle of displaying simultaneous frames in a quick span of time. The most popular courses are 2D and 3D animation. After the completion of this course, you can be a part of movies making, ad making companies, animation and cartoon industries and various other digital works.

**Course Type:** Diploma/Degree  
**Duration:** 1 Year/3 Years  
**Salary:** around 2-3 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Computer and multimedia

**12th Stream:** Any stream

### Fashion Technology

By the modernization of the world, fashion is an integral part of our daily life. The trend in fashion is changing with the advancement of human culture. Various industries have been established for this purpose only. There is a great demand of fashion experts; not only in India but also in abroad. Fashion study covers the design, fab-



ric, texture, quality of fashion goods, manufacturing process and creativity. Fashion not only means wearing but also means wearing and makeup. This is one of the famous courses among the students who are creative and want to contribute to the rapidly changing fashion industry.

**Course Type:** Certificate/Diploma/Degree

**Duration:** 1 Year/2 Years/3 Years  
**Salary:** around 2-3 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Fashion

**12th Stream:** Any stream

### Visual arts

Visual art means the creativity which can be seen by eyes or senses. It is also defines as the decorative form of art. This aspect of art covers various small and big courses. It involves the study in painting, drawing, sculpture, photography, conceptual art, architec-



ture, weaving and fabrics. It is a branch of applied arts which have wide scope and career opportunities for the arts students.

**Course Type:** Certificate/Diploma/Degree

**Duration:** 1 Year/2 Years/3 Years  
**Salary:** around 2-3 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Arts

**12th Stream:** Any stream

### Literary arts

Literary art is a branch of fine arts. It is famous among those students who are creative, imaginative and can convert their imagination and thoughts into textual form. The students who are interested in writing, can choose the career in literary arts. This aspect of art includes poetry, novel-writing, short stories, epics, writing and script writing. You can choose a career as a writer and publisher.





**Course Type:** Diploma/Degree  
**Duration:** 1 or 2 Years/3 Years  
**Salary:** around 2-2.5 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Writing  
**12th Stream:** Any stream

### Performing arts

It is one of the top chosen fields by art and humanities students. Performing art is the part of fine arts. It involves all the activities and studies related to music, theatre, dance, singing, acting, comedy, direction, choreogra-



phy, editing and martial art. It is the basis educational study for ones who wish to make their career in the film and entertainment industry.

**Course Type:** Diploma/Degree  
**Duration:** 1 or 2 Years/3 Years  
**Salary:** around 2-2.5 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Performance  
**12th Stream:** Any Stream

### Aviation & Hospitality Management

Aviation is one of the most interesting career fields among the girls. Anyone who wishes to fly in the sky and serve the people with a smile, this career can fulfill their dream. Aviation and hospitality management cover the ground and air courses of air hostess



and flight stewards. It involves hospitality, customer handling, travel and tourism and aircraft basic training. The course of aviation and management is full of glamor and attitude. After the completion of this course you can go for the hospitality organizations, airlines industries and many hotel industries.

**Course Type:** Diploma/Degree  
**Duration:** 1 Year/3 Years  
**Salary:** around 2-5 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Hospitality  
**12th Stream:** Any stream

### Hotel Management & Catering

Hotel management is one of the big employment industries in the world. There are a lot of opportunities to work within or after the completion of the course as a manager or executive. It is a professional work in the service sector. It involves the management of desk, services, kitchen, catering, bar and hospitality. Chef is one of the popular specializations in catering. After the completion of this course the students are generally employed in the hotel industries, cruiser ships and can even start their own business.

**Course Type:** Diploma/Degree  
**Duration:** 1 Year/3 Years  
**Salary:** around 2-3.5 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Hospitality & service  
**12th Stream:** Any stream

### Mass communication



Mass communication covers the fields of media, journalism, films and ads. It involves professional degree and diploma courses and provides good job opportunities in various fields like

journalism, anchoring, news channels and tv shows. You can go for media, news reading, editing, journalist, surveyor, social works and many related industries. The scope of mass communication is increasing everyday with the growing scenario of media popularity.

**Course Type:** Diploma/Degree  
**Duration:** 1 Year/3 Years  
**Salary:** around 2-3 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Journalism, Communication

**12th Stream:** Any stream

### Languages

By the globalization of employment and employees, the trend of academic courses in languages study has boomed.



It is one of the job-oriented courses chosen by the students after 12th. This course provides a lot of opportunities as a translator/interpreter in many MNCs and government departments. The students who wish to pursue this course, have to select the language of their choice. The course contains the origin, tradition, culture, study and research and complete knowledge of the particular language.

**Course Type:** Degree  
**Duration:** 3 Years  
**Salary:** around 1.5-2 lakh per Annum (for fresher)

**Career Interest:** Learning of languages  
**12th Stream:** Any stream

<https://www.sarvgyan.com/courses-after-12th>





# Amazing Facts



1. **The name Wendy was made up for the book "Peter Pan."**
2. Every three days a human stomach gets a new lining.
3. In 1873, Colgate made a toothpaste that was available in a jar.
4. The Kodiak, which is native to Alaska, is the largest bear and can measure up to eight feet and weigh as much as 1,700 pounds.
5. Mars is the home of Olympus Mons, the largest known volcano in our solar system.
6. The Gastric Flu can cause projectile vomiting.
7. The second best selling game of all time is Jenga. Jenga is a Swahili word, meaning "to build."
8. Cinderella is known as RashinCoatie in Scotland, Zezolla in Italy, and Yeh-hsien in China.
9. One-third pound stalk of broccoli contains more vitamin C than 204 apples.
10. The Flintstones cartoon was the first thirty-minute cartoon to be aired during prime time.
11. The abbreviation Xmas for the word Christmas is of Greek origin. Since the word for Christ in the Greek language is Kristus, which starts with the letter "X," they started putting the X in place of Christ and came up with the short form for the word Christmas.
12. Dipsomania refers to an insatiable craving for alcoholic beverages.
13. China has more English speakers than the United States.
14. Pitcher Darold Knowles once pitched all seven games of one World Series.
15. In a day, kids in the U.S. that are between the ages of 2 - 8 spend 28 minutes of their time coloring.
16. The Ancient Greek women made a type of cheek blush by painting their cheeks with herbal pastes which was made out of crushed berries and seeds.
17. The letter J does not appear anywhere on the periodic table of the elements.
18. Over 200 varieties of watermelons are grown in the U.S.
19. The most dangerous job in the United States is that of a fisherman, followed by logging and then an airline pilot.
20. The words "abstemious," and "facetious" both have all the five vowels in them in order.

<https://greatfacts.com/>







- Who is credited as the inventor of the explosive trinitrotoluene (TNT)? **Alfred Nobel**
- Mesopotamia (modern-day Iraq) roughly translates to “between the two rivers”. One of these rivers is the Euphrates – what is the name of the other? **Tigris**
- Widely considered the father of immunology and vaccines, which individual was responsible for formulating the first smallpox vaccine? **Edward Jenner**
- Located in the Andes of South America, which mountain holds the title of the highest point outside of Asia? **Aconcagua**
- Which American Vice President was responsible for killing Alexander Hamilton in a duel in 1804? **Aaron Burr**
- Running 6300km from source to the sea, what is the longest river in Asia? **Yangtze**
- Costing over \$100 billion to manufacture and additional billions in maintenance, what is the single most expensive object created in the modern era? **International Space Station**
- Located in the centre of the Pacific Ocean, what is the name given to the most remote place on earth (the furthest from land), renowned for being a space-craft cemetery? **Nemo Point**
- During the American Civil, which Union Major General led his troops to victory over Robert E. Lee and his Confederate army at the Battle of Gettysburg? **George Meade**
- Which Italian composer is believed to have had a bitter rivalry with the Austrian composer Wolfgang Mozart? **Antonio Salieri**
- Who is usually credited as the inventor of the first machine gun? **Richard Gatling**
- What is the more common name of the element also known as “hydrargyrum” and “quicksilver”? **Mercury**
- In Norse mythology, what is the name given to the burning rainbow bridge that links Asgard to Midgard? **Bifrost**
- Who composed the soundtrack to Peter Jackson’s Lord of the Rings trilogy? **Howard Shore**
- What is the generic name given to the newest fighter jet (as of August 2022) used in the US army, produced by Lockheed Martin? **F-35**
- What was the name given to the teddy bear-like creatures found on the forest moon of Endor in Star Wars: Return of the Jedi? **Ewok**
- Famous for using styles such as chiaroscuro, which renaissance artist was responsible for the painting “Doubting Thomas”? **Caravaggio**
- In biblical verse, which hero lost all his divine power after having his hair non-consensually cut by his lover Delilah? **Samson**
- Famous for writing “The Handmaid’s Tale”, which author won the Man Booker prize in 2000 with the Novel “The Blind Assassin” and in 2019 with “The Testaments”? **Margaret Atwood**
- The quote “If I have seen further than others, it is by standing upon the shoulders of giants” is noted on the British £2 coin. This quote is credited to which revolutionary British scientist? **Isaac Newton**
- Which famous painter is on the current (2022) British £20 note? **J.M.W Turner**
- Known for its bright blue and red snout, what is the largest species of monkey, weighing around 54kg on average? **Mandrill**
- Chordata, Arthropoda, and Mollusca are all examples of which biological taxonomic rank? **Phylum**
- According to Ohm’s Law, what is the product of flow and resistance? **Voltage**
- How many chromosomes does a typical human egg cell contain? **23**
- Famous as the only known location of the dodo before its extinction, which African island nation is located in the Indian Ocean, 2000km east of the mainland? **Mauritius**
- Which British author and constituent of the Bloomsbury Group wrote the utopian-dystopian classic “Brave New World”? **Aldous Huxley**
- $2\pi r$  is the equation used to generate which measure of a circle? **Circumference**
- Which mammalian organ is responsible for producing trypsinogen, pepsinogen, amylase and lipase? **Pancreas**
- Which 1997 film has received the joint highest number of academy awards of 11, sharing the accolade with Bun-Hur and The Lord of the Rings: The Return of the King? **Titanic**

आदरणीय संपादक महोदय!

सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर हर्षित विद्यार्थियों के चेहरे और नीचे लिखी पंक्तियाँ बता रही थीं कि 'बुनियाद' कार्यक्रम का हाथ थाम कर प्रदेश के विद्यार्थी सचमुच ज्ञान की चाल चलने लगे हैं। इस अंक में हर वह जानकारी दी गई थी, जो विभाग के इन महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के बारे में कोई जानना चाहता है। सफल विद्यार्थियों के विचारों से न केवल सुपर-100 तथा 'बुनियाद' के विद्यार्थी, बल्कि प्रदेश का हर विद्यार्थी प्रेरणा प्राप्त करेगा। इन दोनों कार्यक्रमों की समय-रेखा की जानकारी भी प्राप्त हुई। एक सार्थक व उपयोगी अंक के लिए 'शिक्षा सारथी' की पूरी टीम को हार्दिक बधाई।

अनिल कुमार

सहायक निदेशक

निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का नवम्बर-दिसम्बर 2022 अंक प्राप्त हुआ। सुपर-100 और 'बुनियाद' कार्यक्रम पर आधारित यह अंक काफी लाभकारी रहा। उपयोगी जानकारी संग्रह किए हुए इस अंक ने शिक्षक वृंद में उत्साह एवं आत्म विश्वास का संचरण किया है। शिक्षा सारथी के पूरे परिवार को हृदय तल से धन्यवाद।

रामदिया जांगड़ा

प्राथमिक शिक्षक

राप्रापा कंडूल उकलाना, हिसार



# होमवर्क

बच्चों के होमवर्क में  
नहीं होती घर की कोई बातें  
गुल्ली-डंडा, छुपम-छुपाई,  
और दादी-नानी की कहानी भरी रातें।  
फसलों की महक, तालाब, मेंढक और मछलियाँ  
नीम के पेड़ पर चढ़ता-उतरता गिलहरियों का झुण्ड।  
तवे पर नाचती गोल रोटी  
गाय के गले में पड़ी घंटी की रुनझुन  
नरम-नरम घास का एहसास  
पत्तों पर दमकती ओस की बूँदें  
सुबह की गुनगुनी धूप  
और अमावस की रातें।  
हाँ, बच्चों के होमवर्क में  
नहीं होती घर की कोई बातें।

प्रमोद दीक्षित 'मलय'  
79/18, शास्त्री नगर, अतर्रा - 210201  
बाँदा, उप्र.



# ऋतु वसंत की आई

खिले फूल कलियों ने अपनी,  
कोमल पाखें खोलीं ।  
हवा बही है मधुर स्वरों में,  
चिड़िया भी हैं बोली ।  
कोयल ने मधु राग छेड़कर,  
फाग सुरीली गाई ।  
आई आई खुशियाँ लेकर,  
ऋतु वसंत की आई ।

खेत भरे हैं हरियाली से,  
फसलें हैं लहराईं ।  
धान हवा के साथ झूमते,  
बालें भी इतराईं ।  
झर-झर झरते झरने निर्मल,  
नदिया हैं बलखाईं ।

आई आई खुशियाँ लेकर,  
ऋतु वसंत की आई ।

भौरों ने सुर राग मिलाकर,  
गाया गुन-गुन गाना ।  
ठंडक भी कम हुई आजकल,  
मौसम हुआ सुहाना ।  
फूल और कलियों के ऊपर,  
तितली है मँडराई ।  
आई आई आई खुशियाँ लेकर,  
ऋतु वसंत की आई ॥

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'  
व्याख्याता-हिन्दी  
अशोक उमा विद्यालय  
लहार, भिंड, मप्र